जादूभरी कहानियाँ

डॉ० हरिहर प्रसाद गुप्त

विवेक प्रकाशन
१४७, त्रिवेणी रोड, इलाहाबाद - ३

मूल्य रु० २.५०

प्रकाशक :

विवेक प्रकाशन
१४७, त्रिवेणी रोड
इलाहाबाद–३

कहानी-क्रम

१. जादू भरी सुई ५
२. बूढ़ा और विक्रमादित्य ९
३. बीस नाक वाला अकबर १२
४. कौए की धुन १४
५. मुनीम की करामात : यमराज को निकाल दिया १८
६. लड़की लड़के से चतुर होती है २१
७. चूहे का ब्याह २४
८. अंधेर नगरी में धोबिन रानी २८
९. भूत को लड़के ने चकमा दिया ३६
१०. हाथी के जन्म की कहानी ४०
११. बेताल का प्रश्न ४३
१२. नन्दी, बैल जो ठहरा—भूल हो ही गई ४७
१३. बंदरों का राज्य : मंत्री की सूझ ५०
१४. कागजी गुलाब ५४
१५. सुन्दरी सुरबाला की समझदारी ५६
१६. मूर्ख ने प्राण लिए ६२

———

मिकू-गुड़िया

को

समर्पित

नाना-नानी

१४७, त्रिवेणी रोड,
इलाहाबाद-३

२७, जुलाई १९८४

१. जादू भरी सुई

एक था जादूगर, उसके घर के पास गलमुच्छन नाम का एक आदमी रहता था। उसके खूब बड़ी-बड़ी मूछें थीं। वह आलू, शकरकंद वगैरह की खेती करता था। उस साल उसके खेत में खूब आलू हुए थे। लेकिन उसके पास उन्हें बाजार तक पहुँचाने के लिए बोरे नहीं थे। जब तक आलू बिक न जाते, वह बोरे खरीद भी नहीं सकता था। उसके यहाँ कुछ पुराने टाट पड़े थे। उसने सोचा उन्हीं में से वह कुछ बोरे बना लेगा। लेकिन एक ही बोरा बनाते-बनाते वह काफी थक गया।

उसने सोचा अगर वह पड़ोसी जादूगर की सुई माँग लाए, तो बिना मेहनत के बहुत से बोरे तैयार हो जाएँगे। उसे कुछ करना नहीं पड़ेगा, सिर्फ कह देना पड़ेगा कि सुई एक बोरा तो सी दे। बस सुई खट्खट् बोरा सी देगी।

यही सोच कर वह जादूगर के यहाँ गया और दरवाजा खटखटाया। जादूगर ने दरवाजा खोला। गलमुच्छन ने कहा, "भाई जादूगर, थोड़ी देर के लिये अपनी सुई मुझे दे दो। मैं कुछ बोरे सी कर तुम्हें वापस कर जाऊँगा।"

जादूगर ने कहा "नहीं, भाई मुच्छन, मैं यह सुई नहीं दे सकता। बहुत कीमती है।"

गलमुच्छन उल्टे पाँव वापस आने लगा। जादूगर ने अन्दर जाकर फिर दरवाजा बंद कर लिया। जाते-जाते गलमुच्छन ने देखा जादूगर

के घर की एक खिड़की खुली थी। उसके मन में आया कि क्यों न वह इसी खिड़की से भीतर घुस जाए और सुई जहाँ रखी हो, वहाँ से उठा लाए। एक बार वह कुछ झिझका, फिर आगे बढ़ कर खिड़की से कूद कर भीतर चला गया। सुई एक मेज पर डिबिया में बन्द रखी हुई थी। मुच्छन उस डिबिया को पहचान गया। उसी डिबिया में से उसने कई बार सुई निकालते हुए देखा था। उसने वह डिबिया उठाई और जिस रास्ते आया था, उसी से बाहर निकल कर घर की ओर भागा।

घर पहुँच कर उसने टाट के सारे पुराने टुकड़े इकट्ठे किए और उन्हें जमीन पर कतार में रख दिया। फिर सुई को डिबिया से निकाल कर कहा, "सुई, मुझे कुछ बोरे सी दो।"

सुई तुरन्त बोरे सीने में लग गई। वह उछल कर एक टाट के टुकड़े पर पहुँची और अपने आप ही टाट को मोड़कर बोरा सीने लगी।

गलमुच्छन बहुत खुश हुआ। वह बैठा-बैठा सिर्फ सुई को बोरा सीते देखता रहा। सुई एक बोरा सी चुकने के बाद दूसरे टाट पर पहुँची और दम-भर में दूसरा बोरा भी तैयार कर दिया। दस मिनिट बीतते-बीतते सुई ने वहाँ इकट्ठे किए हुए सारे टाट के बोरे सी दिए।

सुई जैसे रुकना ही नहीं जानती थी। अब उसने चारपाई पर रखा हुआ एक कंबल फाड़ा और उसे सीने लगी। देखते-देखते उसका भी एक बड़ा-सा बोरे के आकार का थैला तैयार हो गया। गलमुच्छन को बड़ा गुस्सा आया। उसने बिगड़ कर कहा, ऐ सुई, अब रुक जा मेरा कम्बल खराब कर दिया तूने। मुझे अब बोरों की जरूरत नहीं है।"

तब गुस्से में भर कर गलमुच्छन सुई के पास पहुँचा और उसे पकड़ना चाहा। लेकिन सुई पकड़ते ही वह उसकी उंगली में जोर से चुभ गई। उसने सुई को फिर डाँटा, "तुझसे रुकने को कहा जाता है, तू रुकती क्यों नहीं ?"

पर सुई ने उसकी बात नहीं सुनी। कंबल का थैला सी देने के बाद वह अरगनी की तरफ बढ़ी। सुई ने एक धोती ली और उसका भी थैला सीने लगी।

गलमुच्छन को यह सहन नहीं हुआ। अभी कुछ दिन पहले ही उसने बाजार से वह धोती खरीदी थी। अपनी धोती बचाने की हड़बड़ी में वह एक सड़सी उठा लाया और उसे रोकने के लिये दबे पाँव उसके पास पहुँचा। सुई जैसे ही सीने के लिये खड़ी हुई, वैसे ही उसने अपनी सड़सी में उसे धर दबाया। पर उससे भी कोई फायदा न हुआ। पर सुई तो उस सड़सी की पकड़ से तुरन्त भाग निकली, हाँ उसके हाथों में ऐसा झटका लगा कि वह दर्द के मारे कमरे भर में नाचता फिरा।

उधर सुई तो रुकना ही नहीं जानती थी। वह इधर-उधर घूमकर कपड़ा ढूँढ़ने लगी। उस कमरे में कोई कपड़ा न पाकर वह दूसरे कमरे की ओर बढ़ी। वहाँ एक चारपाई पर एक दरी रखी थी।

सुई दरी का थैला सीने जा रही थी। गलमुच्छन को समझ में नहीं आया कि क्या करे। "रुक जा, रुक जा," वह जोरों से चिल्लाया, पर सुई नहीं रुकी। अब वह उछल कर दरी पर जा बैठा, ताकि सुई उसका बोरा न सी पाए। लेकिन सुई सीती रही। और यह क्या? दरी उसकी चारों ओर लिपटी जा रही थी और सुई उसके किनारों को मिलाती हुई सीती जा रही थी। गलमुच्छन के सिर, गर्दन और हाथ-पाँव सब उसी दरी में कसते जा रहे थे। सुई ने दरी को उसकी चारों ओर लपेट कर अच्छी तरह सी दिया और जब सी चुकी तब खिड़की की राह निकल कर उड़ती हुई जादूगर के पास जा पहुँची।

बेचारा गलमुच्छन अपनी चारपाई पर दरी में कसा हुआ लेटा रहा। वह अन्दर ही हाथ-पाँव मार रहा था, पर सुई ने ऐसी मजबूत

के घर की एक खिड़की खुली थी। उसके मन में आया कि क्यों न वह इसी खिड़की से भीतर घुस जाए और सुई जहाँ रखी हो, वहाँ से उठा लाए। एक बार वह कुछ झिझका, फिर आगे बढ़ कर खिड़की से कूद कर भीतर चला गया। सुई एक मेज पर डिबिया में बन्द रखी हुई थी। मुच्छन उस डिबिया को पहचान गया। उसी डिबिया में से उसने कई बार सुई निकालते हुए देखा था। उसने वह डिबिया उठाई और जिस रास्ते आया था, उसी से बाहर निकल कर घर की ओर भागा।

घर पहुँच कर उसने टाट के सारे पुराने टुकड़े इकट्ठे किए और उन्हें जमीन पर कतार में रख दिया। फिर सुई को डिबिया से निकाल कर कहा, "सुई, मुझे कुछ बोरे सी दो।"

सुई तुरन्त बोरे सीने में लग गई। वह उछल कर एक टाट के टुकड़े पर पहुँची और अपने आप ही टाट को मोड़कर बोरा सीने लगी।

गलमुच्छन बहुत खुश हुआ। वह बैठा-बैठा सिर्फ सुई को बोरा सीते देखता रहा। सुई एक बोरा सी चुकने के बाद दूसरे टाट पर पहुँची और दम-भर में दूसरा बोरा भी तैयार कर दिया। दस मिनिट बीतते-बीतते सुई ने वहाँ इकट्ठे किए हुए सारे टाट के बोरे सी दिए।

सुई जैसे रुकना ही नहीं जानती थी। अब उसने चारपाई पर रखा हुआ एक कंबल फाड़ा और उसे सीने लगी। देखते-देखते उसका भी एक बड़ा-सा बोरे के आकार का थैला तैयार हो गया। गलमुच्छन को बड़ा गुस्सा आया। उसने बिगड़ कर कहा, ऐ सुई, अब रुक जा मेरा कम्बल खराब कर दिया तूने। मुझे अब बोरों की जरूरत नहीं है।"

तब गुस्से में भर कर गलमुच्छन सुई के पास पहुँचा और उसे पकड़ना चाहा। लेकिन सुई पकड़ते ही वह उसकी उंगली में जोर से चुभ गई। उसने सुई को फिर डाँटा, "तुझसे रुकने को कहा जाता है, तू रुकती क्यों नहीं?"

पर सुई ने उसकी बात नहीं सुनी। कंबल का थैला सी देने के बाद वह अरगनी की तरफ बढ़ी। सुई ने एक धोती ली और उसका भी थैला सीने लगी।

गलमुच्छन को यह सहन नहीं हुआ। अभी कुछ दिन पहले ही उसने बाजार से वह धोती खरीदी थी। अपनी धोती बचाने की हड़बड़ी में वह एक सड़सी उठा लाया और उसे रोकने के लिये दबे पाँव उसके पास पहुँचा। सुई जैसे ही सीने के लिये खड़ी हुई, वैसे ही उसने अपनी सड़सी में उसे धर दबाया। पर उससे भी कोई फायदा न हुआ। पर सुई तो उस सड़सी की पकड़ से तुरन्त भाग निकली, हाँ उसके हाथों में ऐसा झटका लगा कि वह दर्द के मारे कमरे भर में नाचता फिरा।

उधर सुई तो रुकना ही नहीं जानती थी। वह इधर-उधर घूमकर कपड़ा ढूँढ़ने लगी। उस कमरे में कोई कपड़ा न पाकर वह दूसरे कमरे की ओर बढ़ी। वहाँ एक चारपाई पर एक दरी रखी थी।

सुई दरी का थैला सीने जा रही थी। गलमुच्छन को समझ में नहीं आया कि क्या करे। "रुक जा, रुक जा," वह जोरों से चिल्लाया, पर सुई नहीं रुकी। अब वह उछल कर दरी पर जा बैठा, ताकि सुई उसका बोरा न सी पाए। लेकिन सुई सीती रही। और यह क्या? दरी उसकी चारों ओर लिपटी जा रही थी और सुई उसके किनारों को मिलाती हुई सीती जा रही थी। गलमुच्छन के सिर, गर्दन और हाथ-पाँव सब उसी दरी में कसते जा रहे थे। सुई ने दरी को उसकी चारों ओर लपेट कर अच्छी तरह सी दिया और जब सी चुकी तब खिड़की की राह निकल कर उड़ती हुई जादूगर के पास जा पहुँची।

बेचारा गलमुच्छन अपनी चारपाई पर दरी में कसा हुआ लेटा रहा। वह अन्दर ही हाथ-पाँव मार रहा था; पर सुई ने ऐसी मजबूत

सिलाई की थी कि उसकी एक नहीं चली। अन्त में हार कर वह उसी में जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगा।

उसके कुछ पड़ोसियों ने उसका चिल्लाना सुना, तो उसकी मदद को दौड़े आए। सभी लोग उसे उस हालत में देख हँसने लगे। उनमें से एक आदमी दौड़ कर एक कैंची ले आया और सिलाई काटने की कोशिश करने लगा। पर कैंची किसी काम नहीं आ सकी। जादू की सुई और तागा भी जादू का ही था!

लोगों ने मिल कर उसे किसी तरह चारपाई से नीचे उतारा और किसी तरह वह खिसकता-लुढ़कता हुआ घर से बाहर निकला। ऐसा करने में उसे कई जगह चोट आ गई।

अन्त में किसी प्रकार वह जादूगर के घर तक पहुँचा। जादूगर उसे देखकर हँसने लगा। उसने कहा, "मुझे तुम्हारी करतूत का पता है। मैंने तुम्हें सुई चुराते हुए देखा था! लेकिन मैं जानता था कि सुई ही तुम्हें सजा देगी, इसलिए मैं कुछ बोला नहीं।…अब कहो, बच्चू, इस बोरे से बाहर कैसे निकलोगे?"

गलमुच्छन ने कहा, "जादूगर भैया, मुझे किसी तरह इस मुसीबत से उबारो। मैं कभी तुम्हारा एहसान नहीं भूलूँगा।"

"नहीं नहीं," जादूगर ने कहा, तुमने खुद ही अपने ऊपर यह मुसीबत बुलाई है। "अच्छा," जादूगर ने कहा, "लेकिन इससे निकलने के बाद एक हफ्ते तक रोज मेरे घर की सफाई करनी होगी।"

उसने घर सफाई करने का वादा कर लिया, तो जादूगर एक जादू की कैंची ले आया और बात की बात में सारी सिलाई काट दी।

२. बूढ़ा और विक्रमादित्य

जब मैं छोटा था तब की बात है—मेरे यहाँ रोज शाम को एक लाला बच्चूलाल आया करते थे—वे बड़े बैठकबाज थे—बात-बात में अकबर बीरबल के नोंक-झोंक की कहानी सुनाते—वे बड़े मजेदार होतीं। सारे बच्चे लोट-पोट हो जाते थे। एक दिन इन्होंने बताया राजा तो बुद्धू होता है राज्य तो मन्त्री लोग करते हैं। राजा तो एक ही था विक्रमादित्य जिसके नाम से विक्रम संवत् चलता है। मेरे भइया ने कहा—अकबर से बड़ा कोई बादशाह नहीं हुआ मेरे मास्टर साहब ने बताया है। इस पर लाला जी ने अकबर के बारे में दो कथा कही :

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा—देखो बीरबल ! मैं विक्रमादित्य से कोई घटिया सम्राट् नहीं हूँ। फिर भी उसी का सम्वत् चलता है। मेरा नहीं चलता। इसका क्या कारण है ?

बीरबल ने कहा—बादशाह सलामत ! मैं इस समय आपको एक कहानी सुनाता हूँ। शायद उसमें आपके सवाल का जवाब मिल जाए।

अकबर बोले—हाँ, तो सुनाओ, जरा दिल भी बहल जाएगा।

बीरबल—सुनिए, जहाँपनाह ! एक बार विक्रमादित्य किसी देश पर विजय पाने के बाद राजधानी की ओर अकेले लौट रहे थे। चलते-चलते वे एक गाँव के पास गुजरे। उन्होंने खेत की मेंड़ पर एक गरीब और कमज़ोर बूढ़े को घास खोदते देखा।

विक्रमादित्य ने उससे पूछा—बाबा ! तुम बहुत बूढ़े और कमजोर

हो चुके हो । फिर भी तुम इस कड़कती धूप में घास खोद रहे हो , मुझे तुम पर बहुत दया आती है ! बताओ, मैं तुम्हारी, क्या सेवा कर सकता हूँ ?

बूढ़े ने कहा—आपके शब्दों से मेरे दिल को ढाढ़स मिली है । इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ । पर चलते मुसाफिर किसी को क्या सहायता कर सकते हैं ? मैं देखता हूँ, आपके घोड़े की जीन कसी हुई है, इसके शरीर से पसीना बह रहा है । इससे पता चलता है कि आप दूर से आ रहे हैं और न जाने आपको अभी कितनी दूर आगे जाना है । आप अपने रास्ते जाएँ । यहाँ कोई एक दिन की गरीबी थोड़े है जो किसी के पाँच-दस रुपए से कट जाएगी । यह तो भगवान ही के काटे से कटेगी ।

विक्रमादित्य बोले—बाबा ! तुम ठीक ही कहत हो मनुष्य किसी का क्या कर सकता है । फिर भी उसका कर्तव्य तो है कि वह दीन-दुखियों की यथा शक्ति सेवा करे । तुम भी मुझे सेवा करने का अवसर दो ।

यह कह कर विक्रमादित्य ने घोड़े की जीन से लटकते हुए थैले में से एक-एक करके तीन चीजें निकाली और उनके बारे में बूढ़े को बताना आरम्भ किया । उन्होंने कहा—"बाबा देखो, यह एक छोटी-सी थैली है, इसमें हाथ डालकर जितने चाहो रुपए निकाल सकते हो । यह नन्हीं से सन्दूकची है, इसमें से जितने चाहो सोने के जेवर निकाल लो और यह नन्हीं-सी हँड़िया है, इसमें से जितना चाहो भोजन निकालते चले जाओ । यह घोड़ा, जो मेरे नीचे है, जिसके पास होगा उसे सब जगह मान-प्रतिष्ठा मिलती रहेगी । अब इन चारों चीजों में से एक जो तुम्हें पसन्द हो मुझ से माँग लो ।

बूढ़े ने कहा—आपने बहुत कृपा की है । मुझे आज्ञा दें, तो मैं अपने घरवालों से सलाह कर आऊँ ।

राजा ने उसे जाने दिया।

लौटकर बूढ़ा बोला—नहीं, महाराज! मुझे कुछ नहीं चाहिए।

विक्रमादित्य ने हैरान होकर पूछा– क्यों क्या बात हो गई, बाबा?

बूढ़े ने उत्तर दिया—क्या कहूँ महाराज! हम घर में चार व्यक्ति हैं। मैं, मेरी पत्नी, मेरा एक बेटा और बेटे की पत्नी। हम सलाह करने बैठे, तो मेरी पत्नी ने कहा—हंड़िया ले आओ। बेटा बोला—नहीं मुझे तो घोड़ा चाहिये। बहू ने कहा—नहीं, जेवरोंवाली सन्दूकची ला दीजिये। और मैं समझता हूँ कि थैली अच्छी रहेगी। अब आप ही बताइये कि इस हालत में मैं कौन-सी चीज आप से माँग सकता हूँ? यदि कोई एक चीज ले भी जाऊँगा, तो एक खुश होगा, बाकी तीनों नाराज! इसलिए यही अच्छा है कि मैं आप से कुछ न माँगू। अपनी इसी गरीबी में हम सब अपने दिन काटें। हम इसी लायक हैं।

बूढ़े की बात सुनकर विक्रमादित्य ने मुस्करा कर कहा—बाबा, बस, इतनी सी बात से तुम निराश क्यों होते हो। ये लो, तुम चारों ही चीजें ले लो। जो चीज जिसको पसन्द है, उसे वही दे दो।

यह सुन कर विक्रमादित्य घोड़े से उतर पड़े और उन्होंने घोड़े सहित बाकी तीनों अजीब चीजें गरीब बूढ़े के हवाले कर दीं।

बादशाह अकबर विक्रमादित्य की कहानी सुनकर हैरान रह गए।

यह देखकर बीरबल बोले—बस, यही आप में और विक्रमादित्य में फर्क है और जब तक यह फर्क रहेगा, आपका सम्वत् नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।

× × ×

३. बीस नाक वाला अकबर

एक दिन बीरबल एकान्त में बैठे हुए थे। वे किसी विचार में डूबे हुये थे। उस समय सम्राट् अकबर बहुत ही भयानक भेष बना कर बीरबल के सिर पर आ धमके। अजीब भेष था उनका! उन्होंने बीस सिर लगा रखे थे। वे सिर जहाँ सचमुच के जान पड़ते थे, वहीं इतने डरावने भी थे कि देखते ही भय से मनुष्य की चोखें निकल जाएँ – उनके एक हाथ में चमचमाता हुआ भीषण खड्ग और दूसरे में त्रिशूल था।

सम्राट् अकबर का विचार था कि उनका यह रूप देख कर बीरबल डर के मारे भागने की राह न पाएँगे, सहायता के लिये चिल्ला उठेंगे, परन्तु ऐसा कुछ न हुआ। बीरबल सम्राट् की चाल समझ गए, पर उन्होंने यह जाहिर नहीं होने दिया और उठकर पहले तो उनका हर्ष से स्वागत किया, बाद को ऐसी सूरत बना कर बैठ गए, जैसे वे कुछ सोच रहे हों।

बीरबल का यह रवैया देखकर अकबर को बहुत विस्मय हुआ। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि बीरबल को डरना चाहिए था, पर वह डरे क्यों नहीं? इसके विपरीत पहले उनका चेहरा खिल-सा उठा था और अब वे बड़े गम्भीर होकर बैठ गए। उन्होंने आवाज बदल कर बीरबल से पूछा बताओ, तुम मुझे देखकर पहले प्रसन्न और बाद को दुःखी क्यों हुए?

बीरबल ने आदरपूर्वक उत्तर दिया—हे देव! आपके दर्शन से मेरे हर्ष का कोई ठिकाना नहीं रहा। पर आपके इस रूप को देख कर मुझे

बहुत आश्चर्य और चिन्ता हुई है कि आपके बीस नाक हैं पर हाथ तो केवल दो ही हैं और वे भी खाली नहीं। एक में खड्ग है, दूसरे में त्रिशूल। अब मैं सोचता हूँ कि मेरे तो एक ही नाक है। पर जब कभी मुझे नजले-जुकाम की शिकायत हो जाती है, तो एक नाक को साफ करने में दोनों हाथ थक जाते हैं, आपको तो बीस नाक हैं। जब कभी आपको नज़ला या जुकाम हो जाता होगा, तो आपके ये दो हाथ बीसों नाकों को कैसे साफ रखते होंगे ?

बीरबल के इस अनूठे हास्य-व्यंग्य से सम्राट् बहुत प्रसन्न हुए।

बीरबल अकबर के दरबार में अपनी हाजिरजवाबी और हास्य के लिए प्रसिद्ध थे।

X X X

बच्चों से बढ़कर दुनिया में न कोई प्रसन्न है और न कोई सुखी और कहानी से बढ़कर कोई मनोरंजन नहीं। कहानी पढ़कर आप खाना-पीना, रोना-खेलना सब भूल जाते हैं।

---

४. कौए की धुन

मेरी आजी दिन रात काम में लगी रहती थीं—कभी बटोरना, कभी कूटना, कभी पीसना, कभी चौका-बरतन करना, कभी गैया को सानी भूसा करना—मैं कहता मेरे पास बैठो कहानी सुनाओ। जब वे सारे काम कर चुकीं तब पंखा लेकर मेरे पास बैठ गईं और कहने लगीं—काम से बच्चा थकते नहीं : सूरज नहीं थकता, चाँद नहीं थकता। अच्छा, कहानी सुनो—

एक प्यासा कौआ उड़ता-उड़ता एक कुएँ पर पहुँचा, जहाँ एक पनिहारा रस्सी खींच-खींचकर पानी भर रहा था। कौए ने उससे पानी माँगा—

"पन्हर पन्हर तुम पन्हरराज, हम कागराज,
तुम देओ पनुलिया, पीएँ रे पनिया"

पनिहारे ने जवाब दिया, "जरा कुम्हार के पास चले जाओ। एक घड़ा माँग लाओ, तो हम अभी पानी भर दें।"

कौआ फौरन वहाँ से उड़ा, और कुम्हार के पास जाकर बोला :

"कुम्हर कुम्हर, तुम कुम्हारराज, हम कागराज,
तुम देओ घड़लिया, भरें पनुलिया, पीएँ रे पनिया"

कुम्हार ने जवाब दिया, "हमारे पास हिरन का सींग तो है ही नहीं। हम कैसे मिट्टी खोदें? कैसे घड़ा बनावें? जरा हिरन के पास चले जाओ। उससे सींग माँग लाओ, तो हम अभी मिट्टी खोदकर घड़ा बना देंगे।"

कौआ वहाँ से भी उड़ा और हिरन के पास पहुँच कर बोला :

"हिरन हिरन, तुम हिरनराज़, हम कागराज,
तुम देओ सिंगुलिया, खुदे मिटुलिया;
बने घड़ुलिया भरें पनुलिया, पीएँ रे पनिया"

हिरन ने जवाब दिया, भला हम अपना सींग आप ही कैसे उखाड़ें ? जरा झपट कर चले जाओ, कुत्ते को बुला लाओ। वह हमसे लड़ेगा और लड़ाई में सींग टूटकर गिर पड़ेगा बस तुम लेकर झटपट लम्बे हो जाना।"

कौए ने वहाँ से भी उड़ान भरी और कुत्ते के पास जाकर कहा :

"कुत्ता कुत्ता, तुम कुत्तराज, हम कागराज,
तुम लड़ो हिरनिया, गिरे सिंगुलिया;
खुदे मिटुलिया, बने घड़ुलिया,;
भरे पनुलिया, पीएँ रे पनिया"

कुत्ते ने जवाब दिया, "हम तो अभी चलते, पर यहाँ भूख के मारे जान निकली जाती है, खड़े होने की भी हिम्मत नहीं है। ज़रा दौड़-कर ग्वाले के पास चले जाओ। उससे थोड़ा-सा दूध माँग लाओ, तो हम पीकर चलें और हिरन से भी लड़ें।"

कौआ झटपट वहाँ से चलता हुआ, ग्वाले के पास पहुँचा और बोला -

"ग्वाल ग्वाल, तुम ग्वालराज, हम कागराज,
तुम देओ दुधुलिया, पिए कुतुलिया;
लड़े हिरनिया, गिरे सिंगुलिया;
खुदे मिटुलिया, बने घड़ुलिया;
भरें पनुलिया, पीएँ रे पनिया"

ग्वाले ने जवाब दिया, "दूध कहाँ से दें, भाई? कई दिन से घास ही नहीं मिली। बेचारी गाय भूखी है। घास खाए, तो दूध भी दे। न हो, तुम्हीं घसियारे के पास चले जाओ। उससे थोड़ी-सी घास ले आओ। गाय घास खाएगी, तो तुम्हें दूध की कमी न रहेगी। जाते हो, तो जाओ। देर न करो। समझे?"

कौआ यह सुनते ही उड़ चला और घसियारे के पास जाकर बोला :

"घसर घसर, तुम घसरराज, हम कागराज,
तुम देओ घसुलिया, खाए गउलिया;
देए दुधुलिया, पिए कुतुलिया;
लड़े हिरनिया, गिरे सिंगुलिया;
खुदे मिटुलिया, बने घड़ुलिया;
भरें पनुलिया, पीएँ रे पनिया"

घसियारे ने जवाब दिया, "क्या करें, भाई! हम तो तुम्हें ढेर-ढेर घास दे देते, पर हमारे पास हँसिया ही नहीं हैं। घास काटें, तो कैसे? अगर बड़ी जरूरत हो, तो लुहार के पास दौड़े चले जाओ। उससे कहो कि हँसिया बना दे। हमें हँसिया मिला नहीं कि हमने घास काट काट कर ढेर लगा दिया। जितना भी जी चाहे, ले जाना।"

कौआ ताबड़तोड़ लुहार के पास गया और बोला :

"लुहर लुहर तुम लुहरराज, हम कागराज,
तुम देओ हँसुलिया, कटे घसुलिया;
खाए गउलिया, देय दुधुलिया;
पिए कुतुलिया, लड़े हिरनिया;
गिरे सिंगुलिया, खुदे मिटुलिया;
बने घड़ुलिया, पीएँ रे पनिया"

लुहार ने जवाब दिया, "हँसिया दूँ कहाँ से ? आग हो तो हँसिया बने। मगर यहाँ तो आग का नाम भी नहीं है। अगर हँसिया चाहते हो, तो कहीं से आग तलाश लाओ। हमारे पास लोहा है, हथौड़ा है, कोयला है, धौकनी है, अगर नहीं है तो केवल आग। जहाँ तुम आग लाए, हमने ठोंक-पीटकर हँसिया तुम्हारे हवाले किया।"

कौआ वहाँ से उड़ता हुआ आग की तलाश में चला। रास्ते में उसकी नजर एक बुढ़िया पर पड़ी। बुढ़िया चूल्हे के पास बैठी खाना पकाने में लगी थी। चूल्हे में फर-फर आग जल रही थी। कौआ फौरन बुढ़िया के सामने जाकर बोला :

"बुढ़ल बुढ़ल, तुम बुढ़लराज, हम कागराज,
तुम देओ अँगुलिया, बने हँसुलिया;
कटे घसुलिया, खाए गउलिया;
देवें दुधुलिया, पिए कुतुलिया;
लड़े हिरनिया, गिरे सिगुलिया;
खुदे मिटुलिया, बने घड़ुलिया;
भरें पनुलिया, पीएँ रे पनिया;"

एक पतली लकड़ी फर-फर जल रही थी। बुढ़िया ने वही उठाकर कौए को दे दी। कौआ उसे चोंच में दबाकर उड़ चला, परन्तु हुआ क्या! हवा के झोंके से आग की लौ कौए के पंखों पर जा पड़ी। फिर क्या था, पंख तुरन्त जल उठे।

कौए ने प्रयत्न में कमी न की—जान तक दे दी।

---

५. मुनीम की करामात : यमराज को निकाल दिया !

हमारे घर में सरसों-अलसी का बड़ा व्यापार होता था—हमारे एक मुनीम थे वही सब काम-काज देखते थे। जब बाबा के चारों भाइयों में आपस में बँटवारा हुआ तो मुनीमजी की खूब बनी – हिसाब में खूब गोलमाल किया उन्होंने। मेरी आजी मुनीमजी के प्रसंग में एक पुरानी कहानी कहती थी :

एक था हाथी और एक था उसका महावत। एक दिन महावत हाथी को तालाब में स्नान कराने ले गया। वह स्नान कराते समय हाथी को इधर-उधर लेटा देता, बैठाता और खड़ा कर देता था। उस दिन यमराज वहीं एक पेड़ के पीछे छिप कर यह सब देख रहे थे। यमराज हाथी के इस सीधेपन पर बड़े हैरान थे।

महावत जब हाथी को बाँधकर चला गया, तब यमराज ने हाथी से पूछा— गजराज ! तुम इतने बड़े डील-डौल के होकर भी जरा से इन्सान के इशारे पर नाचते हो ! क्या बात है ?

हाथी ने कहा—महाराज, आपका कभी जिन्दे आदमी से पाला नहीं पड़ा, मरे हुओं से तो आपका पाला पड़ता ही रहता है। आप कभी जिन्दे इन्सान से मुलाकात कीजिए। आपको पता लगेगा कि वह क्या चीज है ?

यमराज ने क्रोध में आकर कहा—अच्छा अबकी बार किसी जिन्दा मनुष्य को ही यमपुरी में पकड़ मँगवायेंगे।

उन्होंने यमपुरी आकर अपने चार दूतों को भेजा और कहा — किसी जिन्दा मनुष्य को पकड़ कर लाओ।

आज्ञा की देरी थी। फौरन ही यमराज के दूतों ने एक मुनीमजी को, जो तख्त पर बैठ कर बहीखाता लिख रहे थे, तख्त सहित उठा ले जाने का निश्चय किया और मुनीमजी का तख्त उठाकर यमपुरी को चल दिए।

मुनीमजी ने गिड़गिड़ा कर यमदूतों से पूछा – यह तुम क्या कर रहे हो ?

दूतों ने जवाब दिया, हम तुमको यमराज के पास ले जा रहे हैं।

यह सुनकर पहले तो मुनीमजी डरे, किन्तु तुरन्त ही उन्हें एक उपाय सूझा। उन्होंने एक कागज निकाल कर धर्मराज की तरफ से एक पत्र लिखा —

धर्मपुरी

श्रीमान् यमराज जी,

मैं मुनीमजी को आपके पास भेज रहा हूँ, आप इन्हें फौरन ही अपना काम सौंप दें। आइन्दा से यह आपकी जगह काम करेंगे और आप तुरन्त मेरी अदालत में हाजिर हों।

हस्ताक्षर
धर्मराज

ऐसा लिखकर मुनीमजी ने उस पत्र पर अपने पैर की खड़ाउओं की मुहर लगा कर धर्मराज के जाली हस्ताक्षर बना दिए। जब यम के दूतों ने यमराज के यहाँ मुनीमजी को पेश किया, तो मुनीमजी ने तुरन्त ही वह पत्र यमराज के सामने खोल कर रख दिया। यमराज ने पत्र पढ़कर आश्चर्य से पूछा—यहाँ के काम तुमको सौंप दूँ !

॥ २० ॥

मुनीमजी ने कहा—जी हाँ, आप फौरन मुझे काम सौंप दीजिए और खुद धर्मराज की अदालत में पेश होइए।

बेचारे यमराज हाँफते हुए धर्मराज की अदालत में पहुँचे और पूछा—अन्नदाता, मुझे कैसे याद किया है ?

इधर इतनी देर में ही मुनीमजी ने यमपुरी में अपना दबदबा जमा लिया और अपने पापों को कटवा कर उन्हें पुण्य में बदलवा दिया। फिर अपने रिश्तेदारों तथा इष्ट मित्रों के पापों को कटवा कर उनकी नरक से स्वर्ग में बदली करवा दी।

उधर यमराज पर धर्मराज की डाँट पड़ रही थी कि तुमने नियम तोड़कर जिन्दा मनुष्य को यमपुरी में क्यों बुलाया ? यह सब उत्पात उसी ने खड़ा किया है। तुम शीघ्र वापस जाओ और अपना काम ठीक से सँभालो।

जब यमराज लौटे तो पहरेदारों ने उनको यमपुरी के बाहर ही रोक लिया और कड़क कर बोले—हमारे वर्तमान – यमराज का हुक्म नहीं है। हम आपको जबतक कि धर्मराज का कोई लिखित पत्र न होगा अन्दर नहीं जाने देंगे।

यमराज फिर धर्मराज के पास दौड़े गए और बोले—महाराज आपके आज्ञापत्र के बिना अन्दर जाना दुर्लभ है।

धर्मराज ने शीघ्र ही पत्र लिखा कि मुनीमजी, यमराज को क्षमा कीजिए और इनका पद इन्हें देकर हमें अनुगृहीत कीजिए।

जब यमराज हाजिर हुए तो मुनीमजी ने उनसे लिखित माफीनामा माँगा कि वह आगे कभी जिन्दा इन्सान से मोर्चा नहीं लेंगे। ऐसा करने के बाद मुनीमजी ने यमराज को यमपुरी का काम सौंप दिया और खुद सकुशल भूलोक में आ गए।

— — —

६. लड़की लड़के से चतुर होती है

मेरी माँ को लड़की प्यारी थी और मेरी पत्नी को भैया, इसलिए इस प्रश्न को लेकर उनमें कभी-कभी बातें बढ़ जाती थीं—मेरी माँ कहतीं मेरी नातिन मीरा चतुर है, पढ़ने में तेज है, आर्ट जानती है, गाना-बजाना-काढ़ना, खातिरदारी करना, सब कुछ जानती है, जहाँ जायगी उस घर को बना देगी—भागमान है। पर पत्नी लड़के की बड़ाई सुनना चाहती क्योंकि लड़की तो ससुराल चली जायगी और लड़का बुढ़ापे का सहारा होगा। पर मेरी माँ कहतीं अब लड़कों के दिन गये; अब तो लक्ष्मीबाई, कस्तूरबा, विजयलक्ष्मी, इंदिरा के दिन हैं—लड़कियाँ बहुत-बहुत चतुर होती हैं। जानवरों में गीदड़ से गीदड़ी ज्यादा समझदार होती है - एक पुरानी कहानी है :

जंगल में एक गीदड़ व गीदड़ी रहते थे। उनके दो नन्हें-मुन्ने भी थे। एक तालाब के पास ही उन्होंने अपनी गार (माँद) बना ली थी, आराम से वहीं रहते थे। एक दिन उस तालाब के किनारे एक शेर आकर बैठ गया। शेर भूखा था, इसलिए शिकार की खोज में इधर-उधर भटकने के बजाय वह वहीं शिकार की इन्तजार में बैठा रहा कि कोई जानवर तालाब में पानी पीने तो आएगा ही, बस, अपना काम बन जायगा। गीदड़ को प्यास लग रही थी, पर वह शेर क डर से बाहर नहीं निकल रहा था। दिन काफी चढ़ आया था। अब उसके बच्चों और गीदड़ी को भी प्यास सताने लगी, पर शेर अब भी वहीं बैठा हुआ था।

॥ २२ ॥

आखिर गीदड़ी ने एक तरकीब सोची। उसने गीदड़ से कहा—पहले मैं पानी पीने जाती हूँ। मैं वहाँ तुमको भी बुला लूँगी और तुम भी पानी पी आना। गीदड़ी ने अपनी गार से निकलते ही जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया—ससुर जी ! ओ ससुरजी ! आप इस जंगल के राजा हो, आप हमारा न्याय कर दो।

वह चिल्लाती हुई शेर की तरफ और भी पास जा रही थी। शेर ने सोचा, चलो, पास ही आ जाने दो फिर एक ही कुदान में शिकार कर लूँगा। वह बोला—क्या है बताओ न ? आज मैं तो इसीलिए यहाँ बैठा हूँ कि इस इलाके के जानवरों के झगड़ों का फैसला तुरन्त यहीं कर दूँ।

गीदड़ी बोली—महाराज ! मेरे दो बच्चे हैं। वह निगोड़ा गीदड़ कहता है कि वे मेरे हैं और मैं कहती हूँ कि मैंने उन्हें दूध पिला कर पाला है इसलिए वह मेरे हैं। अब आप ही न्याय कर दो कि वे किसके हैं ? ओ निगोड़े ! आ रे, यहाँ, ससुर जी के पास न्याय करवाएँ। पर देख, जरा हाथ पाँव धोकर आना। ससुर जी राजा हैं, राजा ! राजा के सामने यों बिना हाथ मुँह धोए नहीं आया करते हैं।

गीदड़ ने तालाब में जाकर मुँह-हाथ धोए और पानी पिया। फिर शेर के सामने आकर कुछ दूर पर खड़ा हो गया। हाथ जोड़कर बोला-अन्नदाता ! आप ही सच्चा न्याय करनेवाले हैं। उन दोनों बच्चों को दूध पिला कर इसने पाला है, तो क्या इसी से वे इसके हो गए ? यूँ तो गाय का दूध पीकर मनुष्य बड़े होते हैं तो क्या वे सब गाय के ही हो गए ? महाराज ! आप जरा उन बच्चों की शक्ल सूरत देखिए ! वे बिल्कुल मुझसे मिलते-जुलते हैं, इसीलिए वे मेरे ही हैं। आप आज्ञा दें तो मैं उन्हें भी हाथ-मुँह धुलवा कर श्रीमान् की सेवा में पेश कर दूँ।

शेर ने सोचा, चलो, दो तो ये हैं ही, दो बच्चे और आ जाएँ तो पेट भर के खाऊँगा-कई दिनों से शिकार हाथ नहीं लगा है। बोला हाँ, हाँ उन्हें भी हाजिर करो।

गीदड़ सिर झुका कर चला गया। कुछ देर इन्तजार करने के बाद भी जब वह नहीं आया तो गीदड़ी बोली - देखिए ससुर जी ! मैं कहती थी न कि यह पूरा अहमक है। कामकाज कतई नहीं करता। अब लगता है जाकर सो गया है। यदि आप आज्ञा दें, तो मैं उन तीनों को बुला लाऊँ। यहाँ बैठे-बैठे जरा प्यास भी लग आई है, थोड़ा पानी भी पी आती हूँ।

शेर की इजाजत लेकर गीदड़ी ने भर पेट पानी पी लिया और जाकर अपनी गार में छुपकर बैठ गई।

जब शेर इन्तजार करता-करता थक गया, तो उनकी गार के बाहर आकर आवाज देने लगा—ओ गीदड़ी ! तुम न्याय करवाना चाहती हो ना ? बाहर आओ। तुम्हारे बच्चों की शक्ल देखूँ।

गीदड़ी ने भीतर से ही आवाज लगाई—ससुर जी ! हमने तो आपस में राजीनामा कर लिया। बच्चे इसके रहें या मेरे रहें, कोई बात नहीं। शेर गुर्राता हुआ दूसरे शिकार की तलाश में किसी और जंगल की ओर चला गया।

कहानी पढ़ने से बुद्धिमानी-चतुराई आती है। पुरानी कहानियाँ सीख से भरी हैं। कहानी जरूर पढ़ें।

हिमाचल की एक कहानी

७. चूहे का ब्याह

हिमाचल प्रदेश में एक शहर है मन्डी। वहाँ मेरी लड़की मीरा की एक सखी थी। वह मुझे अपने यहाँ के गीत-कहानी सुनाया करती थी। एक दिन की बात है वह मेरे घर आई। मेरी पत्नी आनन्द भैया पर खूब बिगड़ रही थीं, उन्होंने दालमोट का डिब्बा खोल दिया था। रात भर में चूहों ने सब ढोकर खाली कर दिया था। पत्नी कहतीं—खोल दो आलमारी, सब खा जाय, मुझे क्या मैं मर-मर कर बनाऊं और तुम अपने ससुर-सालों को खिलाओ। ससुर-सालों का नाम सुन कर हम सब हँस पड़े। इतने में भगवती आई। वह कहने लगी—भाभीजी, आज चूहे का ब्याह हो रहा होगा। इसलिए वह ले गया। हम सब हंस पड़े। श्रीमती जी भी मुस्कराईं पर बिगड़ते हुए बोलीं, 'चाहे जिसका मायन-बियाह हो हमारा तो नुकसान हुआ ही। हमारे बच्चे क्या खायँ ?'

भगवती ने कहा—माता जी सच, चूहे चुहिया का विवाह हुआ होगा। देखिए मैं बताती हूँ :—

एक बार एक चूहे को शादी का शौक हुआ। वह अपने दोस्त के यहाँ गया। कहने लगा अपनी ससुराल के पास मेरी भी ससुराल कर देना—"आपणे घोरो शाउरू मेरो देई लाई।"

उसके दोस्त ने कहा, अभी ठहरो, चैत-बैसाख आने दो। अभी तो

घर में अनाज भी नहीं है। दावत में क्या खिलाओगे ? मेरे पास कुलथी (एक दाल) रखी है, उसी को पकाऊँगा, चूहे ने उत्तर दिया।

उसके दोस्त ने पूछा कि कुलथी का क्या बनाओगे ? उत्तर में चूहे ने कहा कि उसकी खीर बनाऊँगा।

फिर उसके दोस्त ने पूछा—खीर कैसे बनाओगे ? चूहे ने उत्तर दिया– दूध से।

दोस्त ने पूछा—दूध कहाँ से लाओगे चूहे ? उसने उत्तर दिया मेरी मालकिन की गाय दूध देती है, बस थोड़ा दूध ले आऊँगा।

फिर दोस्त ने पूछा शक्कर कहाँ से लाओगे ? वह बोला कि बगलवाले घर में शक्कर की बोरियाँ हैं।

चूहे की जिद्द करने पर उसका दोस्त शादी ढूँढ़ने निकला। एक देश से दूसरे देश, दूसरे देश से तीसरे देश इसी प्रकार वह घूमता रहा। पर कोई तैयार न हुआ। सब ने कहा बैसाख में शादी करेंगे, जब खेत से फसल कटेगी।

उसका दोस्त निराश होकर लौट रहा था। रास्ते में एक कानी चुहिया मिली। वह रुक गया। बोला, अरे कहाँ जा रही हो ? चुहिया ने उत्तर दिया—कहाँ जाऊँ, खाने की तलाश में हूँ। जवाब म चूहे ने कहा अरे तुम शादी क्यों नहीं कर लेती ? सारी परेशानी से छुट्टी मिल जायेगी। चूहा कमायेगा और तुम मजे से खाना। बोली, मुझ कानी से कौन शादी करेगा ? चूहा बोला कि अरे तुम्हें क्या, मैं शादी करा दूँगा। तुम हाँ तो करो। चुहिया बोली—नेकी करे पूछ-पूछ।

चूहे का दोस्त बड़ी खुशी से जल्दी-जल्दी लौटने लगा। शाम होते-होते वह अपने दोस्त के घर पहुँचा। सलाम-दुआ के बाद बात-चीत शुरू हुई। चूहे ने अपने दोस्त से पूछा-अरे, कहीं शादी बनी कि नहीं ?

कुलथी भी खत्म हो जायेगी। मेरी मालकिन भी घर छोड़ कर जाने वाली हैं। भाई शादी तो मैं करवा दूँ पर एक शर्त है कि बीबी से कभी झगड़ा मत करना नहीं तो भाग जायेगी। चूहे ने कहा—अरे उसे रोज खीर, मलाई, पूंड़ी खिलाऊँगा। मालकिन के घर गाय रहती है, क्या समझते हो ?

चूहे के दोस्त ने कहा—अच्छा, डोली-कहार का इन्तजाम करो। चूहा मन ही मन खुशी से फूल उठा। झट उठ कर बगल के दूसरे दोस्त के यहाँ गया। उससे बोला भाई शादी तै हो गयी है, तुम्हें नेवता देने आया हूँ। उसने पूछा कब है ? कहने लगा—बस आज ही रात बारह बजे साइत है। फिर उसने पूछा, मेरे लायक कुछ काम ? उसने कहा—भाई डोली का इन्तजाम, उसके परदे का इन्तजाम, और बहू ले आने का इन्तजाम, सब तुम्हें ही तो करना है। उसने कहा, घबराओ नहीं मैं सब कर दूँगा मेरे मालकिन ने अभी अभी जड़ाऊ परदा बनवाया है अपनी पालकी के लिए—बस, वही लाऊँगा।

चूहा बहुत खुश हुआ और लौट कर उसने अपने दोस्त से सब हाल कह सुनाया। बारात सज गई। एक के पीछे एक चल पड़े। रात के १२ बजे पहुँच गए द्वारचार करने। उधर से भी स्वागत की तैयारी बड़ी धूमधाम से थी। चूँ-चूँ की चारों ओर शोर होने लगी। खूब भरपेट दावत हुई। पालकी सज गई और फिर चुहिया की बिदाई बड़े धूमधाम से की गई। दुलहिन की डोली चल पड़ी। सबेरा होते-होते चूहा अपने घर पर पहुँचा। चूँ-चूँ की आवाज सुन कर घर के बच्चे जाग पड़े। चूहे ने बच्चों से प्रार्थना की—सो जाओ, शोर मत करो। मूसरानी का डोला आ रहा है।

'चुप रे छेड़वो पाईना बेला रोला,
सेरी माप आवो ला, मुशणी रा डोला।"

डोला आया। चूहे ने उसको डोली से उतारा। पर चुहिया उसके पीछे-पीछे चल न सकी। चूहे ने दोस्त से कहा—अरे यह तो कानी है। चूहे के दोस्त ने कहा, कानी है तो क्या हुआ इसके कान तो सूप के समान हैं!' "मुशणी वे काणी, कानो जेरे ला शुपो।"

चूहा प्रसन्न हो गया। चुहिया को देख देख कर वह पूँछ उठा-उठा कर नाचने-बजाने लगा। चूहे की अभिलाषा पूरी हुई।

उसका उजड़ा घर बस गया।



८. अंधेर नगरी में धोबिन रानी

महोबा (हमीरपुर) में मेरे भाई के बड़े लड़के की ससुराल है। बहू बुन्देलखंडी कहानी सुनाती है, उन्हीं में से एक कहानी है पोपाबाई की :

एक थे राजा। नाम था उनका धुंधपाल। जैसा नाम वैसे ही गुण भी। उनके राज में टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता। राजकाज सब राम के भरोसे था। सो जिस किसी ने जहाँ चाहा, धर दबाया। राजा के थीं पांच दर्जन रानियाँ! हर रानी के आधे दर्जन लड़के-बच्चे – साठ छक्के – पूरे तीन सौ साठ की पल्टन! परिवार नियोजन तो तब था नहीं।

हर रानी के छह-छह बांदियाँ और एक-एक बांदी पर छह-छह खिदमतगार। सरेआम लूट-पाट और अंधेरदर्गी का राज। प्रजा बेचारी त्राहि-त्राहि कर रही थी।

बहती गङ्गा में हाथ धोना सभी चाहते हैं। सो उसी शहर में थे एक लाला। पेशे के पुराने पटवारी। 'प' से पाजी, 'ट' से टर्रा, 'व' से वाहियात और 'र' से रर्रा—पाजी, टर्रा, वाहियात और टर्रा। वैसे थे जाति के कुरमी, पर अपने को कहते थे बरिया का मुंशी। एक छोटा बरगद का पेड़ था, राजा धुंधपाल की कचहरी के पास। सो वहीं बरिया के मुंशी ने डेरा डाल दिया। आदमी तो आदमी है, पत्थर भी सिंदूर से पोत दिया जाने पर गाँव का डीह बाबा या सत्तीमाई बन

जाता है। तब, मुंशीजी ने भिड़ाई अकल, काम कर गई उनकी चाल। पुराने कागद-पत्तर और एक मुहर लेकर कंबल बिछा कर बैठ गए। जब भी कोई आदमी कचहरी में दरख्वास्त देने जाता, उसे प्यार से बुलाते—"एहो बाबू, जरा सुनो तो!" पास आने पर अपनी मुहर मार देते उसकी दरख्वास्त पर।"

चलती का नाम है गाड़ी। बरिया के मुंशी जी की चल गई। जब तक उनकी मुहर न हो हाकिम-हुक्काम दरख्वास्त मंजूर ही नहीं करते थे! यह कोई भी नहीं पूछता था कि आखिर ये मुंशीजी हैं कौन - कहाँ से यह टपक पड़े? धुंधपाल का राज था आखिर, मुंशीजा की पाँचों उंगलियाँ घी में! तीन-तेरह करना उनके बाँयें हाथ का खेल हो गया। रोज सैकड़ों रुपये धूल में से पैदा करने लगे।

एक दिन का इत्तिफाक। एक बड़े सरदार की बहन की शादी पड़ गई। छुट्टी लेनी जरूरी थी! जल्दी से जाकर दरख्वास्त पेश की वजीर के रूबरू। वजीर ने नाक-भौं सिकोड़ कर अर्जी कर दी वापस। सरदार बिचारा घबड़ा गया।

हुक्म हुआ—बरिया वाले मुंशी की मुहर नहीं है, लगवाना जरूरी है।

सरदार के सिर पर तो आसमान भहरा पड़ा। अब कहाँ जाय वह? मौके पर तो गधे को भी बाप बनाना पड़ता है, मुंशी जी तो आदमी के औलाद थे। पता लगाते-लगाते बरिया वाले मुंशी के पास पहुँचे। मुंशी जी पूरे घाघ ठहरे—बोले, रात को मुहर नहीं लगती है!"

"अरे, मुंशी जी, मुझे अभी जाना है, मेरी बहन की शादी है कल।"

"तो कल आओ, प्रेम से मुहर लगा दूँगा।" सरदार ने देखा

काम ऐसे नहीं बनेगा। झट चांदी के सौ रुपये गिन दिए। मुंशी ने एवज में अपनी मुहर मार दी।

सरदार के मन में मुहर की घटना कांटे की तरह पैठ गई। लौट आने पर उसने पूछ-ताछ की, चिल्ल-पों की, हाय-तोबा मचाई। पर, सुनता कौन? राजा ने कहा: "तुम पूरे अहमक हो। अरे, हमारे बाप-दादों ने इसे बरिया का मुंशी बनाया होगा। यह तो पुश्तैनी है। तुम भला क्या जानो! हां, उस मुंशी के लिए कचहरी के एक कोने में पक्का घर बनवा दिया जाए और दस हथियार बन्द सिपाही उसकी हिफ़ाजत के लिए मुकर्रर कर दिए जायें।"

चलो, यह भी खूब रही! एक तो करैला दूसरे नीम चढ़ा। राजा की आज्ञा भी मिल गई। अब तो मनमानी लूट करने लगे मुंशीजी।

एक कहावत: जैसन देखै गाँव क रीत, तैसन उठावे आपन भीत।

× × ×

उसी राज्य में था एक गड़रिया। विपदा का मारा गड़रिया बेचारा गया उसी राजा के एक मेले में। भेड़-बकरियाँ तो राजा के हाकिम-हुक्काम अपनी-अपनी रसोई के लिए दक्षिणा में ही चट कर गये। कीमत के नाम पर कानी कौड़ी भी नहीं मिली। उल्टे अपनी ही गाँठ से चुंगी और टैक्स देना पड़ा।

गड़रिया भूखों मरने की बजाए अपने आठ कुम्हड़ों को तोड़कर कम्बल में बाँधकर फिर बाजार में आया। बाजार में कुम्हड़ों के रखते ही आ गये बरिया के मुंशी जी, सो एक कुम्हड़ा उनका हो गया। फिर आए पटवारी, एक उनका भी। कोतवाल, सिपाही, जमादार,

चुंगी वाले, नाकेदार और सरदार सभी ने एक-एक कुम्हड़ा लिया और हो गए नौ-दो-ग्यारह। बस कंबल बिछा रह गया।

पास ही खड़ा था एक भाँड़। उसने आव देखा न ताव, बस उस गड़रिया राम की रही-सही पूंजी वह कम्बल भी कंधे पर डाला और एक ओर को चल पड़ा।

"अरे, ओ भाई! कुम्हड़े तो सरकारी अमला अपनी-अपनी दस्तूरी में उठा ले गये। तुम भला यह बचा-खुचा कंबल क्यों लिये जा रहे हो? बताओ तो, तुम हो कौन?" गड़रिए ने चिल्ला कर पूछा।

"अरे, ओ भेड़ों के भसुर! मैं तो दरबार का साला हूँ," भांड ने मसखरी की और चलता बना।

गड़रिया आठ-आठ आँसू रोता हुआ घर पहुँचा। घरवाली ने पूछा, "क्या हुआ?"

"आठ कुम्हड़ी नौ बिकें ऐसी देखी हाट,
धुंधपाल के राज में देखा ऐसा ठाट!"

गड़रिए की घरवाली को रात भर नींद नहीं आई। सबेरे होते ही उसने कहा:

"ईंट का जवाब पत्थर से,
चीनी-घी खाव शक्कर से!"

"आयँ! क्या कहा? फिर से समझा दे तो री!"

"कोई ढेला मारे, तो तुम पत्थर मारो और मक्कारी से, चालाकी से घी-चीनी खाओ?"

"सो कैसे, गड़ेरिन रानी?"

गड़ेरिन रानी ने गड़रिया को समझाया—

"सुनो एक लंबे डंडे में कलछुल की तरह एक गोल अधसेरा फिट करवा लो। कंधे पर एक लम्बा झोला लटका लो। बिना पूछे-ताछे बेधड़क बाजार में चले जाओ और…'

"और क्या ? उस काठ की अधसेरी लंबी कलछुल को अपने माथे पर पटकूँ ?"

"रहे भेड़ के भसुर ही, भक्कू नाथ ! मेहर न लड़िका, चलले दुआरिका !"

"हे देख, ढेर बकबक करी, तो चरन परसाद को कोने से उठा लाऊँगा !"

"अरे सुनो भी—तो सबकी दूकान से उसी अधसेरी कलछुल से आटा, चीनी, चावल, दाल, नमक वगैरह भरकर लेते जाना।"

"तेरा माथा ! अरे कोई धर-पकड़ करे, तब ?"

"तब कहना—'राम भरोसे रा डेऊ, बात न पूछे केऊ !"

कंधे पर झोला लटका, हाथ में डेऊ (काठ की अधसेरी कलछुल) लेकर राम भरोसे गड़ेरिया चल पड़ा।

कोई दुकानदार टोकता तो रामभरोसे तपाक से कहता—"राम भरोसे रा डेऊ, बात न पूछै केऊ !"

रोजका यही धन्धा हो गया। धुन्धपाल का राज, भला कौन पूछता कि रामभरोसे का यह डेऊ वाला टैक्स कैसा है ?

सो राम भरोसे गड़रिया मालामाल हो गया।

× × ×

गड़रिए के पड़ोस में थी एक खूबसूरत धोबन। नाम था पोपाबाई। देह की काठी चढ़ाव-उतार से भरी। चलती, तो लगता कहीं की राजकुमारी ही हो। गड़रिए के पड़ोस में रहती थी इसलिए उसका मुँहलगी भी थी। उसने देखा कि रामभरोसे तो मालामाल हो गया और वह भी काठ की कलछुल के बल पर! आई एक दिन, बोली—

"ओ लाला, डेउवा ने तुम्हारे दिन फेर दिए। अब मोरी सोई कछु सेव (मेरी खोज-खबर कुछ लो), कौनऊ ऐसो उपाय बताव, जोसे मैं सोई बैठे खाऊँ और मलारें गाऊँ।"

"भौजी, कौन बड़ी बात है यह! राज धुंधपाल का है। अरे, तू कहे तो तुझे रानी बनवा दूँ, रानी!" गड़रिए ने मूँछें ऐंठते हुए कहा।

"नेकी और पूछ-पूछ! मोरे घर में जो आबटाव हती, सब बेंच खाई। अब मोरी कछु मदत करो। बड़ा एहसान होई," पोपाबाई ने मुस्करा कर कहा।

सो, रामभरोसे डेउवा उठा कर धुंधपाल के रनिवास की ओर चल पड़ा। राजा के साठ रानियाँ थीं। साठों के अलग-अलग बखरी। एक रानी अभी हाल में ही मरी थी, सो उसकी बखरी सूनी थी। अंधे के हाथ बटेर लग गई। भाग्य ने उसका साथ दे दिया था। दौड़ा हुआ आया। धोबन पोपाबाई को सजाया, अगल-बगल को जताया कि राजा ने इसे रानी बना लिया है। पालकीवाले कहारों को घर जाकर फटकारा—

"अरे, कहारो! तुम लोगन को ससुरो होश-हवास नहीं है, पोपाबाई महारानी की पालकी राज-महल को ले चलनी है और टाँग पर टाँग रखे तुम सुरती फाँक रहे हो?"

कहारों के होश उड़ गए। आनन-फानन में पालकी सजाकर वे आ गए। उधर रामभरोसे गड़रिए ने बाजेवालों को फटकारा—

"अरे ओ बर्खुरदारों ! महारानी पोपाबाई की पालकी जा रही है और तुम सब यहाँ मक्खी मार रहे हो !"

बाजेवालों की नानी मर गई। जो जहाँ था वहीं टीं-ई-पी-ई, धम्म-धप्प, पों-पों-पों, झम्म-झम्म···शहनाई, नगारा, बिगुल और झाँझ बजाने लगे।

कहारों ने बोल भरे :

"हाँ, भइया, बचके, दाएँ सम्हार !

हाँ, भइया, दाब कें, बाएँ सम्हार ! !···"

आगे-आगे डेउवा लिए गड़रिया आवाज देता चला :

'हटो ए लोगो ! हटो, रास्ता छोड़ो !'

"पोपाबाई महारानी की सवारी आ रही है।"

रनिवास में पहुँच कर उस खाली बखरी में पोपाबाई को उतरवा कर अगल-बगल की बाँदियों और खिदमतगारों को मुकर्रर कर दिया। किसी ने पूछा तक नहीं कि यह पोपाबाई महारानी कहाँ से आई ? बदस्तूर सारे काम-काज चलने लगे। गड़रिया रामभरोसे पोपाबाई की बखरी का मैनेजर होकर आराम से वहीं रहने लगा।

कारिंदा, कामदार, जिलेदार और खजांची ने समझा कि यह भी राजा की ब्याहता रानी ही होगी। पोपाबाई थी सुन्दरी, सो बड़े-बड़े ओहदेदार उसके तलवे चाटने लगे। राजा भी पोपाबाई के रूप पर लट्टू हो गये थे।

दिन बीतते गये। एक दिन पोपाबाई को खबर मिली कि उसका पुराना गधा सोढ़र मर गया है। पोपाबाई बुक्का फाड़कर रोने लगी—"हाय मेरा सोढ़र मर गयो !"

धीरे-धीरे सारे नगर भर में यह खबर फैल गई कि राजा साहब के परिवार में किसी की गमी हो गई है, कोई चल बसा है। बड़े-बड़े हाकिम-हुक्काम, सेनापति, खजांची सभी अपनी-अपनी समवेदनाएँ प्रकट करने लगे। मातमपुर्सी का बाजार गर्म हो गया। राज्य के पुरोहितों और सेठ-साहूकारों ने अपनी-अपनी मूँछें मुड़ा डाली। यह किसे पता था कि एक गधे की मौत के कारण उनके तैल-सिंचित-गल-मुच्छे मुड़ाए जा रहे हैं।

राजा साहब से भी नहीं रहा गया। पोपाबाई के महल में जाकर पूछा, "रानी, यह सोढ़र थे कौन ?"

"अब क्या बताऊँ तुम्हें, एक नायाब चीज थी वह ! मेरे बाप ने मुझे दस गधे दिये थे, सोढ़र उनमें सर्वश्रेष्ठ था। आज भी मुझे उसकी याद आती है।"

"तो सोढ़र गधा था तुम्हारा ?"

"अरे, राजा साहब ! गधे आदमी से समझदार होते हैं !"

"राजा चुप हो गया। धोबिन रानी को जवाब देने की हिम्मत ही नहीं पड़ी।"

———

६. भूत को लड़के ने चकमा दिया

मेरी आजी भूत-प्रेत में विश्वास करती थीं पर कहतीं लड़के तो भूत को भी ४२० पढ़ा देते हैं—चंट होते हैं चंट ! एक लड़का स्कूल से लौट रहा था। बारिश के दिन थे। एक पेड़ के नीचे रुक गया। थोड़ी देर में उसे एक आवाज सुनाई दी—तू यहाँ क्यों खड़ा है ? लड़के ने उत्तर दिया, "कपड़े भीग जाते, इसीलिए यहाँ आ खड़ा हुआ। बारिश बन्द होते ही चला जाऊँगा।"

भूत बोला, "मैं भूत हूँ, खा जाऊँगा !"

"अच्छा, भूतजी, मैं चला," कहकर लड़का जैसे ही चला, तैसे ही भूत ने उसे फिर पकड़ लिया। बोला, "अब तूँ नहीं जा सकता। मैं तो तुझे खाऊँगा।"

"भूतजी, भला लड़कों को भी कोई खाता है।"

"मैं लड़के या बड़े के झमेले में नहीं पड़ता। जो मिलता है, उसे खा जाता हूँ," भूत बोलता रहा। "हाँ, तुझे एक शर्त पर छोड़ सकता हूँ। वह यह है कि तू रोज मेरे कपड़े धोया कर, बिस्तर बिछाया कर और वह रखा है राशन उसकी रोटियाँ खुद बनाकर मुझे खिलाया कर।"

"और पढ़ने कब जाया करूँ ? लड़के ने पूछा। भूत ने कहा "अब तेरी पढ़ाई खतम। मेरी नौकरी शुरू। नहीं तो तुझे खा जाऊँगा।"

लड़का सोचता रहा। बहुत देर के बाद भी जब उसे कोई उपाय न सूझा, तो उसने भूत से कुछ पूछने और उसके बाद उपाय खोजने का निश्चय किया। अतः रात को जैसे ही भूत आया, लड़के ने उसे गरम-गरम खाना खिलाया। बाद में उसके सोने के लिये बिस्तर लगा दिया। खाट पर लेटकर भूत बोला, "चल, मेरे पैर दबा, आज मैं बहुत थक गया हूँ।"

लड़का उसके पैर दबाने बैठ गया।

जब लड़का पैर दबा रहा था, तब उसने पूछा, "क्यों, श्रीमान्‌जी, आप कहाँ जाया करते हैं ?"

पहले तो भूत ने बताने से इन्कार किया। बाद में लड़के के बहुत जोर देने पर बोला, "अच्छा सुन, मैं रोज भगवान के दरबार में जाया करता हूँ।"

लड़का बोला, "तब आप कल उनसे पूछ आना कि मेरा आयु कितने वर्ष की है ?"

"पूछ आऊँगा", भूत लड़के को आश्वासन देकर सो गया।

दूसरे दिन भूत जब शाम को आया, तब उसने लड़के को बताया कि उसकी आयु ७९ वर्ष है।

लड़का कुछ सोचकर बोला, "तब आप भगवान से कहकर उसमें एक साल और बढ़वा कर पूरी ८० साल करा दीजिए।"

"बढ़वा दूँगा," भूत ने हाँ कर ली। लड़का कुछ सोचता रहा। लेकिन अगले दिन भूत कुछ उदास-सा घर लौटा। लड़के के पूछने पर वह बोला, "भगवान ने मेरी बात नहीं मानी। कह दिया—अब उम्र नहीं बढ़ेगी।"

"तब आप उनसे एक साल कम करा लाइए।"

"अच्छा। कल घटवा लाऊँगा।"

दूसरे दिन जब भूत खाना खाकर चला, तब लड़के ने उम्र घटवाने की याद भूत को फिर दिलाई।

रात को भूत जब लौटा, तब वह कल से भी ज्यादा उदास था। लड़के को देखकर खिन्न मन से वह बोला, "भगवान ने तेरी उम्र घटाने से भी इन्कार कर दिया। साफ कह दिया कि जितनी उम्र मैं लिख देता हूँ, उसमें से साल दो साल तो क्या, घंटा आधा घंटा उम्र नहीं घटाई-बढ़ाई जा सकती।"

भूत की बात सुनकर लड़के ने तुरन्त कुछ निर्णय करके उससे कहा, "आज मैं अपने घर जाऊँगा और अभी जाऊँगा।"

"तू नहीं जा सकता," कहकर भूत ने कहा। "मैं तुझे मार डालूँगा।"

लड़के ने चूल्हे में से जलती हुई लकड़ी निकाली। बोला, "आज मैं तुझे मार डालूँगा। तू मुझे क्या मारेगा! मुझे तो ७९ साल से पहले भगवान भी नहीं मार सकता।"

भूत घबराया। धीरे-धीरे वह गुफा से बाहर जाने लगा। लड़का भी जलती हुई लकड़ी लेकर उसके पीछे-पीछे चला।

भूत घबरा कर बोला, "तू अपने घर जा, मेरा पीछा छोड़।"

"मुझ पर स्कूल में जो गैरहाजिरी का जुर्माना हुआ होगा वह कौन देगा?"

"अरे, वह भी मैं दे दूँगा। देख, मेरी चारपाई के नीचे अलाउद्दीन

खिलजी का खजाना दबा हुआ है, उसे तू ले जाना। लेकिन मुझे मत मार।"

लड़का बोला, "ला, जल्दी से थोड़ा-सा तो मुझे अभी दे दे। बाकी फिर किसी दिन आकर ले जाऊँगा। और तू अपनी नाक रगड़ कर कसम खा कि अब किसी को नहीं डराएगा-धमकाएगा।"

भूत ने जल्दी से अपना खजाना खोदना शुरू किया और बाद में उसे लड़के को देकर नाक रगड़ कर कसम खाई। लड़का बोला, "अब कुछ दूर मेरे साथ चलकर गाँव पहुँचने का रास्ता भी बता।"

भूत आगे-आगे चल दिया। लड़का उसके पीछे-पीछे। लड़के की बगल में बस्ता लटक रहा था और एक हाथ में जलती हुई लकड़ी थी, लड़के की चतुराई से भूत उसके बस में हो गया।

हमारी पुरानी कहानियों में परियों-भूतों-पिशाचों की कहानी कही गई है। वे बड़ी मनोरंजक हैं। साथ ही उनमें अनेक सीख की बातें हैं; इसलिए इन्हें पढ़ें, आनन्द उठावें और कुछ सीखें।

आसाम की लोक कथा :

१०. हाथी के जन्म की कहानी

कहते हैं किसी गाँव में एक औरत रहती थी। उसके पास भगवान का दिया सभी कुछ था। बस कमी था तो सिर्फ संतान की। संतान के अभाव में वह औरत बहुत दुखी रहा करती थी। कई बरस तक जादू-टोने और पूजा-पाठ करने के बाद आखिर भगवान ने उसकी बात सुन ली और उसके एक लड़का पैदा हुआ। लेकिन यह लड़का सामान्य आदमी से कई गुना मोटा और बेढंगा था। औरत को उस लड़के को पाकर कोई खास खुशी न हुई। जैसे-जैसे वह लड़का बड़ा होता गया, वह और ज्यादा मोटा और बेढंगा होता गया। आलसी भी वह बहुत ज्यादा था। लोगों ने उसका नाम हाथी रख दिया।

हाथी बचपन से ही अपनी माँ का कहना कभी नहीं मानता था। चौबीसों घंटे बस खेलने में लगा रहता। आस-पास के बच्चों को वह बहुत परेशान करता और उन्हें अक्सर मार-पीट भी देता। जब दूसरे बच्चे अपने घर जाकर उसकी शिकायत करते तो उनकी माताएँ हाथी की माँ के पास आतीं और लड़ती-झगड़तीं। हाथी की माँ इन शिकायतों से बहुत परेशान हो गयी थी। उधर मारने-पीटने से भी हाथी अपनी हरकतों से बाज नहीं आता था।

एक दिन हाथी की माँ ने उससे बाजार से कुछ सामान खरीद लाने के लिए कहा। लेकिन हाथी तो ठहरा महा आलसी, भला वह क्यों माँ की बात सुनता। जब बार-बार माँ के कहने पर भी हाथी बाजार जाने को तैयार न हुआ तब उसकी माँ ने गुस्से में आकर

पास रखी हुई कुल्हाड़ी उसके सिर पर दे मारी। हाथी के माथे से बहुत खून निकला और लाख कोशिशें करने पर भी वह कुल्हाड़ी उसके माथे से नहीं निकली। हाथी की माँ को इससे अपने किए पर बड़ा पछतावा हुआ, लेकिन अब किया भी क्या जा सकता था। उसके माथे में लगी वह कुल्हाड़ी धीरे-धीरे सूँड़ के रूप में बढ़ने लगी। हाथी और भी ज्यादा बदशकल हो गया।

इतना होने पर भी हाथी अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। वह पहले की तरह निकम्मा और आलसी बना रहा। एक दिन फिर जब उसकी माँ ने उससे ओसाई करने को कहा, तो उसने वह बात सुनी-अनसुनी कर दी। माँ ने इस बार गुस्से में आकर ओसाई के सूप हाथी के सिर पर दे मारे। कुल्हाड़ी की ही तरह ये सूप भी हाथी के सिर से लगे रह गए और बड़े-बड़े कानों के रूप में विकसित हो गए।

हाथी अब भी आलसी का आलसी बना रहा। अब उसके साथ पड़ोस का कोई भी बच्चा नहीं खेलता था जब भी वह घर से बाहर निकलता दूसरे बच्चे उससे डरकर अपने-अपने घरों में जाकर छिप जाते। आखिर में हाथी ने घर से निकलना ही बन्द कर दिया। वह सारे दिन अहदियों की तरह घर में पड़ा रहता। उसकी माँ उसकी यह हालत देखकर और ज्यादा चिंतित रहने लगी।

एक दिन हाथी की माँ खाना पका रही थी। उसे खाना पकाते-पकाते किसी चीज की जरूरत पड़ी तो उसने हाथी को आवाज लगाई लेकिन हाथी के कान पर तो जूं भी न रेंगी। जब माँ के आवाज पर आवाज लगाने पर भी हाथी ने न सुना, तो वह हाथ में चिमटा लिये हुये हाथी के पास आई। उसे अहदियों की तरह पड़ा देखकर माँ को बहुत गुस्सा आया उसने चिमटे से ही हाथी की खबर लेनी शुरू कर दी। लेकिन यह क्या? इस बार चिमटा हाथी की सूड़ के पास जाकर

चिपक गया था और माँ के जोर लगाकर खींचने पर भी वह वहाँ से नहीं छूटा। इस चिमटे के ही दो बड़े-बड़े दाँत बन गए।

एक दिन हाथी घर पर पड़े-पड़े जब तंग आ गया, तो वह घूमने के लिए नदी के किनारे निकल गया। घूमते-घूमते जब उसने नदी के पानी में अपनी परछाईं देखी, तो एकदम चौंक उठा। एक बदशक्ल जानवर की तरह अपना चेहरा देखकर उसे बहुत दुःख हुआ। उसे अपने आप पर ही गुस्सा आ रहा था कि क्यों उसने अपनी माँ का कहना नहीं माना। काश, वह अपनी माँ का कहना मानता, तो आज वह भी एक खूबसूरत और कामवाला आदमी होता। लेकिन अब यह सब सोचने से भी क्या फायदा था "अब पछताए क्या होते हैं जब चिड़िया चुग गईं खेत", अपनी उस भद्दी सूरत को लेकर उसका मन गाँव में जाने को नहीं हुआ और वह घर छोड़ कर जङ्गल में चला गया।

वहाँ हाथी एक पेड़ के नीचे पड़ा सो रहा था। माँ उसे पकड़कर घर ले आई। अब माँ को यह डर सताने लगा कि कहीं हाथी फिर घर छोड़कर न चला जाए। हाथी चाहे कितना ही निकम्मा और बदसूरत था, पर था तो आखिर उसका बेटा! उसके दिमाग में एक तरकीब आई—हाथी के पाँवों में उसने दो मोटे-मोटे मूसल बाँध दिये, जिससे वह फिर कहीं भागकर न जा सके। बाद में ये मूसल ही उसके खूब मोटे-मोटे पाँव हो गए।

मूसल बाँध देने का भी कोई असर हाथी पर नहीं पड़ा और वह फिर जङ्गलों की तरफ चला गया। भला, बेचारी माँ भी कैसे उसे घर में बाँध कर रखती? इस तरह दुनिया में एक बिल्कुल ही नए जीव का निर्माण हो गया जो बाद में 'हाथी' के नाम पर हाथी कहा जाने लगा।

———

११. बेताल का प्रश्न

राजा त्रिविक्रमसेन ने मुर्दे को उतारकर कन्धे पर धर लिया और वह आगे चला। बेताल बोला— महाराज, आप वैसे बड़े पराक्रमी हैं, पर आपको मैं एक कहानी सुनाता हूँ, जिससे आपकी थकावट दूर हो जाये।

अंगदेश में विष्णु स्वामी नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उनके तीन लड़के थे। जब लड़के जवान हुये तब एक दिन विष्णु स्वामी ने अपने यज्ञ में बलि देने के लिये उनसे एक कछुआ मँगवाया।

वे तीनों समुद्र के किनारे जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने एक बहुत बड़ा कछुआ देखा किन्तु कछुए का घिनौना और लिबलिबा रूप देखकर तीनों में से कोई भी उसे पकड़ने को तैयार नहीं हुआ। वे तीनों एक-दूसरे से कहने लगे कि कछुआ तो मिल गया। इसे जरूर ले चलना चाहिये, नहीं तो पिताजी का यज्ञ भंग हो जायेगा।

सभी एक-दूसरे से कहते थे कि तुम उठाओ, पर उस कछुए को छूने के लिये कोई तैयार नहीं था। उनमें बहस-सी होने लगी।

एक बोला मैं तो नारी के लक्षणों का आचार्य हूँ और इसीलिये नारीविलासी हूँ। भला मैं इसे कैसे छू सकता हूँ?

दूसरे ने कहा मैं तो उत्तम भोजन का आनन्द लेने वाला भोजन-विलासी हूँ। भला यह काम मैं कैसे कर सकता हूँ?

तीसरा बोला—मैं तो आराम से पलंग पर खुर्राटे भरनेवाला शय्याविलासी हूँ। भला मैं क्यों कछुआ पकड़ता फिरूँ ?

तीनों ही झगड़ते-झगड़ते विटंक देश के राजा प्रसेनजित के यहाँ जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने-अपने गुणों का बखान किया, और फिर राजा से पूछा कि हम में से कछुआ कौन पकड़े ?

राजा प्रसेनजित ने कहा—अच्छा, आज तो तुम लोग आराम करो। कल सबेरे मैं तुम्हें इसका जवाब दूँगा।

राजा ने भोजनविलासी को रात में खूब सुगन्धित और स्वादिष्ट भोजन खाने को दिया। पर यह भोजन देखकर भोजनविलासी ने नाक-भौं सिकोड़ ली। उसने एक कौर भी नहीं खाया।

राजा ने जब उससे पूछा कि भोजन स्वादिष्ट और अच्छा तो है ? तब भोजनविलासी बोला—महाराज, इस खाने में तो बदबू आ रही है ! मैं इसे कैसे खा सकता हूँ ?

राजा आश्चर्य में पड़ गये। उसने रसोइया को बुला कर पूछा—क्या बात है ?

रसोइया बोला—महाराज, भोजन तो बहुत बढ़िया बना था। सभी ने उसे खाया और उसकी प्रशंसा की।

राजा ने भोजनविलासी से ही पूछा—भाई, तुम्हीं बताओ कि भोजन में क्या दोष है ?

उसने जवाब दिया—महाराज ! इसमें श्मशान की बू आ रही है। ऐसा लगता है कि यह चावल किसी मरघट में पैदा हुआ है। मैं इसे नहीं खा सकता।

राजा ने इसकी छानबीन की तो पता चला कि सचमुच चावल

किसी श्मशान के पास के खेत में पैदा हुआ है। राजा दंग रह गया। सोचने लगा, सचमुच यह भोजनविलासी है।

उधर, नारीविलासी के पास राजा ने एक बहुत सुन्दर दासी को भेजा। वह सजधज कर और अपने बदन में सुगन्ध का लेप करने के बाद पान और तरह-तरह के सुन्दर सामान लेकर फूलों का गजरा पहने हुए उसके पाँव दबाने आई।

दासी के विस्तरे के पास पहुँचते ही नारीविलासी ने नाक दबा ली और भाग कर बाहर निकल गया और जोर से थू-थू करने लगा। वह चिल्लाने लगा – हाय ! बकरी की बू से मैं मरा जा रहा हूँ।

राजा उसका चिल्लाना सुनकर उसके पास आये। बोले क्या बात है, बकरी की बू कहाँ से आई ?

नारीविलासी ने कहा—महाराज, इस दासी से बकरी की बू आ रही है।

छानबीन करने पर पता चला कि दासी के जन्म लेते ही उसकी माँ मर गई थी इसलिए उसे बकरी का दूध पिला कर ही पाला गया था।

दासी बेचारी का सिर लटक गया। राजा फिर चकित हो गया। सोचा यह सचमुच ही नारीविलासी है।

बचा शय्याविलासी। उसके लिये सात गद्दे लगाकर ऊपर से साफ चादर और कालीन बिछाई गई। लेकिन जैसे ही वह बिस्तर पर लेटा वैसे ही चीख कर एकाएक उछल पड़ा। बोला कैसा बिस्तर है ? इस पर तो शरीर दर्द करने लगा।

उसकी पीठ पर एक जगह एक गोल-सा निशान भी पड़ गया था।

उसका शोरगुल सुनकर राजा भी आ पहुँचे। पूछा—इतना शोरगुल क्यों हो रहा है ? क्या हुआ ?

शय्याविलासी बोला—महाराज, इस बिस्तर में कोई कसर जरूर है। शायद इसके नीचे कुछ है, जिसके गड़ने से मेरे शरीर में दर्द होने लगा।

राजा ने बिस्तर पलटवा कर खोजबीन करवाई तो सबसे नीचे रखे हुये सातवें गद्दे के नीचे एक घुंघराला बाल शय्याविलासी के पीठ में गड़ रहा था और इसी से उसकी पीठ में गोल दाग पड़ गया था।

उसे देखकर राजा एकदम चौंक पड़ा। मन में सोचा, सचमुच यह शय्याविलासी है। एक बाल के कारण उसके शरीर में पीड़ा होने लगी और पीठ में दाग पड़ा गया।

सारी कहानी सुना कर बेताल बोला—महाराज, आप ही बताइये कि इन तीनों में से किसे पितृहत्या का पाप लगेगा ? और तीनों में सबसे बड़ा विलासी कौन है ? अगर आप जानबूझ कर नहीं बतायेंगे तो आपके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे।

राजा त्रिविक्रमसेन ने चुप्पी तोड़ कर कहा—इन तीनों में शय्याविलासी ही सबसे बड़ा विलासी है, क्योंकि उसका शरीर इतना सुकुमार है कि सात गद्दों के नीचे गड़े एक बाल के कारण उसकी देह में दाग पड़ गया। इसलिए पितृहत्या का पाप अन्य दोनों भाइयों को लगेगा। राजा का उत्तर सुनते ही बेताल उनके कन्धे से उछल कर फिर शीशम के वृक्ष पर लटक गया।

---

१२. नन्दी, बैल जो ठहरा---भूल हो ही गई

एक दिन मैंने अपनी माँ से पूछा : शंकर जी के मन्दिर के सामने नन्दी बैठा रहता है, वह कौन है ? कहने लगीं वह शंकर जी की सवारी है—एक बैल है। मैं हैरान हुई शंकर जी बैल पर बैठ कर कैसे सारे संसार का चक्कर करते होंगे। मैंने माँ से कहा माँ, बैल तो मूर्ख को कहते हैं—हमारे पंडित जी एक लड़के को रोज कहते हैं वह तो निरा बैल है। माँ उसे हिसाब-किताब कुछ नहीं आता। तो क्या नन्दी नासमझ है। माँ सच-सच बताओ न ! माँ ने कहानी शुरू की—

एक दिन कैलाश पर्वत के शिखर पर बैठ कर महादेव, पार्वती और गणेश जी ब्रह्मा जी की सृष्टि का कौतुक देख रहे थे। पास में ही उनका प्यारा नन्दी तीन पैर बटोर कर ठाठ से पगुरा रहा था। पार्वती ने महादेव से कहा—नाथ ! ब्रह्मा की सृष्टि तो सुन्दर है, परन्तु इसमें जिस रफ्तार से धीरे-धीरे मनुष्य बढ़ते जा रहे हैं और उनकी भूख भी बढ़ती जा रही है उस तेजी से धरती की उपज नहीं बढ़ रही है। इसलिये उनके खाने-पीने की आदतों को अभी से ठीक कर दीजिये। नहीं तो आगे चलकर कहीं वे एक दूसरे को ही न खाने लगें।

महादेव सोचने लगे कि भूलोक में किसको भेजूँ। गणेश सुस्त है। मोटाई के मारे उससे हिला-डुला नहीं जाता। बुद्धि-जीवी लोगों से दौड़-धूप का काम होता भी नहीं। उन्होंने नन्दी को ही भेजना ठीक समझा और पुकारा—नन्दी !

महादेव का शब्द सुनते ही चारों पैर फैलाकर, एक अंगड़ाई

और जँभाई लेकर, कान झाड़कर, नकुए साफकर नन्दी उठ खड़ा हुआ और झुककर आदर से बोला—प्रभो, क्या आज्ञा है ?

महादेव ने कहा—अरे, भूलोक में जाकर मेरा एक सन्देश कह आना है। क्या यह काम तू कर सकेगा ?

नन्दी ने घमंड से उत्तर दिया—क्यों नहीं कर सकूँगा ? कहिए, क्या सन्देश है ?

महादेव ने कहा सन्देश छोटा-सा ही है। भूलोक के लोगों से जाकर यही कहना है कि आठवें दिन खाया करो और रोज नहाया करो।

नन्दी बोला—बस, इतना-सा ही सन्देश है ? मैं अभी कह आता हूँ। यह कहता हुआ वह पूँछ उठाकर भूलोक की ओर भागा।

पार्वती ने पुकार कर पूँछा—अरे, भागा क्यों जा रहा है ? यह तो बता क्या कहेगा ?

भागते-भागते ही नन्दी बोला—वही जो महादेव जी ने कहा है।

गणेशजी ने भी बीच में आकर टोका, परन्तु उसने मुड़कर, सींग तानकर, डकारकर कहा—गणेश जी, बुद्धि का ठेका अकेले आपने ही नहीं ले रखा है। नन्दी का भड़कना देखकर बेचारे गणेशजी लौट आए।

भूलोक के लोग बड़े भक्त होते हैं। महादेव का नन्दी आया है, यह सुनते ही लाखों लोग दर्शन को दौड़ पड़े। सबने धूमधाम के साथ उसका जलूस निकाला, उसकी पूजा की, उसे पेड़ा, बरफी-लड्डू, जलेबियाँ खिलाई, दुशाले ओढ़ाए, माला-मुकुट पहनाया, दक्षिणा में सोने का एक ढोल दिया और उसकी आरती उतारी।

सन्ध्या समय गले में ढोल लटका कर बड़े ठाट से सींग उठाए

और खुरों से जमीन खोदते हुये नन्दी सभा में पहुँचे और अपने लिये बनें हुये ऊँचे मंच पर चढ़कर ढोल पीटकर, गम्भीर ऋषभस्वर में डकार उठे -भाइयो सुनो ! देवाधिदेव महादेव की आज्ञा है "आठवें दिन नहाया करो और रोज खाया करो।"

महादेव का सन्देश सुनकर सब लोग प्रसन्न हो उठे। सबने करतल ध्वनि के साथ नन्दी का जय-जयकार किया। नन्दी के लौट आने पर महादेव ने पूछा—अरे वहाँ क्या कह आया ?

नन्दी ने उत्तर दिया—वही, जो आपने कहा था।

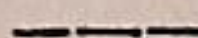
पार्वती बोलीं फिर भी बता तो सही, मनुष्यों को किस तरह सारी बात समझाई ?

बड़े ठाठ से ढोल पीट कर नन्दी ने कहा—मैंने तो कहा था, भाइयो, सुनो ! देवाधिदेव महादेव की आज्ञा है कि आठवें दिन नहाया करो और रोज खाया करो। फिर पार्वतीजी की ओर मुड़कर बोला—क्यों माताजी, यही तो पिता जी का सन्देश था न ? भला मैं उसे कैसे भूल सकता था ?

सब लोग ठठ्ठा मार कर हँस पड़े। नन्दी बिगड़ कर बोला—हँस क्या रहे हैं ? क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ ?

महादेव ने कहा—अरे मूर्ख, तू उल्टा कह आया है। अब संसार के लोग खाना ही खायेंगे, स्नान-श्रम भूल जायेंगे।

अपनी गलती पता लगने पर नन्दी ने हाथ जोड़ कर कहा—नाथ ! चमड़े की जीभ है, इधर-उधर हो ही जाती है। इसमें मेरी बुद्धि का कोई दोष नहीं है।



१३. बन्दरों का राज्य : मन्त्री की सूझ

बहुत दिनों की बात है। एक बार राजा ब्रह्मदत्त ने एक बहुत बड़ा बाग लगाया था। उस बाग में राजा और रानियों के नहाने के लिये एक सुन्दर सरोवर था। बाग की रक्षा का उत्तम प्रबन्ध था। किसी भी बाहरी आदमी का अन्दर आना मना था। लेकिन बाग के पेड़ों पर बन्दरों का ही राज्य था।

एक दिन ब्रह्मदत्त की पत्नी सहेलियों के साथ नहाने के लिये उसी बाग में आई। सबने अपने-अपने गहने-कपड़े उतारकर तट पर रख दिये। एक दासी को गहनों और कपड़ों की देखभाल करने के लिये रख दिया गया और सब निश्चित होकर पानी में उतर गई।

संयोग से दासी की आँख लग गई। एक बन्दरिया ऊपर से यह सब देख रही थी। वह धीरे से नीचे उतरी और उसने सब गहने लेकर एक पेड़ के खोखले में छिपा दिये। जब दासी की आँख खुली तो उसने गहनों को गायब पाया। वह इधर-उधर ढूँढने लगी। पर गहने कहाँ से मिलते ? वह सोचने लगी, गहने कहाँ नदारद हो गये ? अब राजा मुझ पर चोरी का सन्देह करेंगे और दंड देंगे। इसीलिये यदि चोरी का हल्ला कर दूँ तो लोग समझेंगे कि कोई दूसरा आदमी चोरी कर ले गया है। यह सोच कर वह चिल्लाने लगी चोर चोर—रानी के गहनों को कोई चोर ले गया। सब सिपाही दासी की बताई हुई दिशा की ओर भागे।

उसी समय एक सीधा-सादा किसान खेत में काम करके अपने घर आ रहा था। सिपाहियों को अपनी ओर आते देखकर वह डरा और भागने लगा। अब सिपाहियों को सचमुच किसान पर सन्देह हो गया। उन्होंने उसे पकड़ कर दरबार में हाजिर किया।

वह बार-बार चोरी से इन्कार करता रहा। जब उस पर खूब मार पड़ी तो छुटकारे का दूसरा उपाय न देखकर वह चिल्ला उठा,—हाँ, हाँ! उन हारों को मैंने ही चुराया है।

राजा ने उसे अपने पास बुलाकर पूछा—वे हार कहाँ है? तूने चोरी क्यों की?

किसान बोला—यह सच है, हारों को मैंने चुराया है। पर अपने लिये नहीं। आपके खजांची साहब ने मुझे इसके लिये भेजा था। इस-लिए मैंने उनको दे दिये।

खजांची घबड़ा गया। उसने सोचा कि एकदम इन्कार करने से मार पड़ेगी। इसलिये वह प्रश्न पूछे जाने से पहले ही बोल उठा—हाँ, महाराज, किसान सच कहता है। मैंने ही उसे भेजा था। पर वे सब मैंने आपके पुरोहित जी को दे दिये क्योंकि कल मेरे यहाँ पूजा-पाठ करके उन्होंने दक्षिणा में वही माँगे थे। इसलिये मैंने ऐसा किया।

पुरोहितजी को ऐसा लगा कि अब उनकी मरम्मत की बारी है, इसलिये वह झूठ बोल उठे—खजांची जी का कहना सोलहों आने सच है। उन्होंने हार आदि मुझे दिये थे, पर मैंने उन्हें आपके कोतवाल जी को एक उपकार के बदले में दे डाले।

अब कोतवाल भी घबड़ा गया। वह बोला—हाँ, मुझे पुरोहित जी ने बड़े प्रेम से जेवर दिये थे, पर मैंने उन्हें संगीताचार्य को दे दिये।

संगीताचार्य का सिर चकराने लगा। उनको न सूझा कि वह किसका नाम ले। इसलिये वह चुप रह गये।

राजा ने सबको जेल में बन्द करवा दिया। राजा का बुद्धिमान मंत्री दरबार में बैठा ये सब बातें सुन रहा था। उसके मन में शंका हुई कि इतने बडे बाग में, जिसके चारों ओर बड़ी-बड़ी दीवारें हैं, घुसकर कौन आ सकता है? इसमें अवश्य कुछ रहस्य है। इसीलिये उसने रात को जेल के पास बैठकर उन सब की बातें सुनने के लिये एक गुप्तचर भेजा।

रात में सन्नाटा छा जाने पर सब जेल में बातें करने लगे। खजांची किसान से अकड़ कर बोला—क्यों रे! अपने को बड़ा लाट समझ रहा है। बोल, मैंने क्या किया था? तूने मुझे क्यों फँसाया?

किसान नम्रता से बोला—जी, मैं भी बेगुनाह हूँ। सिपाहियों ने मुझे भागते देखकर पकड़ लिया। जब मैं पकड़ा गया और मार पड़ी, तब मैंने सोचा कि जेल में हमारा एक साथी भी होना आवश्यक है। इसलिए मैं,—मैं…?

इतने में पुरोहित जी बोले—अरे! बड़ा बना है खजांची, किसान पर तो अकड़ रहा है। बोल, तूने मुझे क्यों फँसाया?

खजांची बोला, धर्माचार्य जी! जब मैंने देखा कि जेल में जाना ही पड़ेगा तो मैंने सोचा कि एक पुरोहित को भी साथ ले चलें। इसीलिये मैंने भी…?

अब कोतवाल भी बिगड़ उठे। उन्होंने क्रोध से पूछा—क्यों रे! पुरोहित, मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था? तूने मुझे फांसी की डोर से क्यों बांधा?

पुरोहित जी नम्रता से बोले—मैंने भी यही सोचकर कि… कि मैं वहां पर भी आप का सहारा बना रहे।

संगीताचार्य भी अब बिगड़ उठे। उन्होंने कोतवाल से पूछा—पहले तू बोल, कि तूने मुझे क्यों फँसाया ?

कोतवाल पहले तो कुछ बोल नहीं सका, पर फिर कहने लगा—जी, मैंने सोचा कि जेल में बेकार बैठे रहने के बजाय गाना सुनें तो मन शान्त रहेगा। इसीलिए मैंने तै किया कि एक संगीताचार्य को भी साथ ले चलें।

गुप्तचर बैठे सब सुन रहा था। उसने सारी बातें जाकर मन्त्री को सुना दी। अब मन्त्री समझ गए कि किसी आदमी ने हार नहीं चुराए हैं। उन्हें अब बाग के बन्दरों पर सन्देह हुआ। इसका उन्हें एक उपाय सूझा। उन्होंने बाहर के १०-२० बन्दरों को पकड़वा कर उनके गले में नकली हार डालकर, बाग में छुड़वा दिया। इसे देखकर बाग के पुराने बन्दरों ने भी रानी के हार पेड़ के खोखले से निकाल कर पहन लिए। मन्त्री के सिपाहियों ने उन बन्दरों को घेर लिया। सब को उसी वेश में राजा के सामने लाया गया। मन्त्री ने राजा को फिर सारी कथा सुनाई।

राजा बन्दरों की चालाकी-बुद्धिमानी पर प्रसन्न हो गए, यद्यपि उन्होंने शरारत तो बहुत बड़ी की थी। राजा ने सब को मुक्त कर दिया और उन्हें एक जंगल का राजा बना दिया। वह प्रदेश 'बन्दरों का राज्य' कहलाता है।

---

१४. कागजी गुलाब

एक दिन मैं अपनी लड़की मीरा के साथ दिल्ली में कनाटप्लेस के पास बने फव्वारे के पास घूम रहा था। कुछ दूर पर पटरी पर गुलाब के गुच्छे बिक रहे थे—लड़की ने खरीदने का आग्रह किया। जब दूकानदार के पास पहुँचा और दाम पूछा तो उसने पूरी दस की नोट माँगी—मैं तो उल्टे पाँव लौट पड़ा पर वह खरीदने पर तुल गई, खैर मैंने वादा किया कि खरीद दूँगा। कुछ दूर चला ही था कि प्लास्टिक के बड़े सुन्दर-सुन्दर गुलाब के गुच्छे बिक रहे थे—ये उनसे भी खूबसूरत थे। जब इन्हें खरीद कर वह घर आई तब उसकी माँ ने कहा तुम्हें असली नकली का भेद नहीं मालूम है अच्छा, आज सोते समय तुम्हें एक राजकुमारी और गुलाब के फूल की कहानी सुनाऊँगी - रात हुई और कहानी शुरू हुई :

राजकुमारी सुमन श्री को फूलों का बड़ा शौक था। उसकी फुलवारी में तरह-तरह के फूलों की क्यारियाँ थीं। उसका कमरा फूल से महकता रहता था। एक बार राजकुमारी के पिता उसके लिये कागज के रंग-बिरंगे फूलों का एक गुच्छा लाए। उसमें एक गुलाब का फूल भी था।

एक दिन उस गुलाब के फूल की पंखुड़ियों से खेलती हुई राजकुमारी बोली—"काश, इस सुन्दर फूल में सुगन्ध होती, मैं इसे अपने बालों में गूँथती।"

गुलाब ने देखा, राजकुमारी के जूड़े पर ताजे जूही के फूलों का

गजरा लिपटा हुआ है। उसने सोचा, मैं भी राजकुमारी के सिर पर सजूंगा, पर खुशबू कहाँ से लाऊँ ?

मन्दिर के पास सफेद गुलाब का एक बगीचा था। वह कागजी गुलाब उड़कर उनके पास गया। वे भोले-भाले गुलाब यह समझे कि हमारी बिरादरी का कोई महापुरुष पधारा है। सबने उसका आदर किया। बोले—आओ, भाई आओ।

कागजी गुलाब बोला—मैं रनिवास से आया हूँ। तुम्हारी भी पहुँच रनिवास तक करवा सकता हूँ, पर अपनी सुगन्ध का नमूना तो मुझे दो।

सब फूलों से थोड़ी-थोड़ी सुगन्ध ले अपने शरीर में लपेट कर कागजी गुलाब फिर रनिवास को लौट आया। राजकुमारी ने जब देखा कि इस गुलाब में केवल सुन्दरता ही नहीं, सुगन्ध भी है तो उसने उसे बालों में गूँथ लिया। पर दूसरे दिन, उसकी नकली सुगन्ध उड़ गई, तो राजकुमारी ने उसे निकम्मा समझ कर जमीन पर फेंक दिया।

---

१५. सुंदरी सुरबाला की समझदारी

एक धनी किसान और चरवाहे में एक झगड़ा उठ खड़ा हुआ। फसल काटने के बदले में यह ठहरा था कि किसान चरवाहे को एक बछिया देगा, पर जब हिसाब चुकाने का समय आया तो किसान ने अपने वचन से मुकर कर साफ-साफ कह दिया कि मैं तुम्हें कुछ न दूंगा ' जाओ, जो करना हो सो कर लो। विवश होकर चरवाहे को गाँव के मुखिया के पास निर्णय के लिए जाना पड़ा। मुखिया बड़ी सूझबूझ का था।

किसान और चरवाहे, दोनों की बात सुनकर मुखिया ने कहा—मैं तुम दोनों से तीन प्रश्न पूछूंगा; जो बढ़िया उत्तर देगा, बछिया उसी की होगी। क्या यह फैसला आप दोनों को मंजूर है ?

दोनों ने उत्तर दिया—जी हाँ, मंजूर हैं ?

यह सुनकर मुखिया ने कहा—

पहला सवाल है : संसार में सबसे अधिक तेज चलने वाली चीज क्या है ?

दूसरा है—संसार में सबसे अधिक मीठी चीज क्या है ?

तीसरा है—संसार में सबसे अधिक धनी कौन है ? कल इसी समय आप मुझे इन सवालों के उत्तर दीजिए।

किसान और चरवाहा अपने-अपने घर चले गए। किन्तु, प्रश्नों का ठीक उत्तर पता लगाने में दोनों परेशान थे।

किसान का मुरझाया चेहरा देखकर उसकी पत्नी ने पूछा—क्यों आप किस सोच में पड़े हो ?

किसान ने उसे सारी कहानी कह सुनाई।

—बस, इतनी सी बात है। लीजिए, मैं तीनों प्रश्नों के ठीक-ठीक उत्तर बताए देती हूँ, पत्नी बोली ! फिर उसने किसान के कान में कुछ कहा जिससे वह मन ही मन में सोचने लगा – अब तो जीत मेरी ही होगी।

× × ×

जब चरवाहा घर पहुँचा तो, वह भी उदास-उदास सा था। उसकी बच्ची सुरबाला से यह देखकर रहा न गया। वह पूछ ही बैठी—पिता जी, क्या कारण है आपकी उदासी का ?

चरवाहे ने उसे सारा किस्सा सुना दिया। सुरबाला जितनी सुन्दर थी, उतनी ही चतुर भी थी। दूसरे दिन ही उसने अपने पिता की सारी उलझनें सुलझा दी।

जब किसान और चरवाहा मुखिया के यहाँ गए तो मुखिया ने पहले किसान से अपने प्रश्नों के उत्तर पूछे।

किसान ने गला साफ करते हुए कहा—जनाब, संसार में सबसे अधिक तेज चलने वाली वस्तु है मेरा घोड़ा। तेजी में कोई भी वस्तु उसका मुकाबला नहीं कर सकती। मेरे यहाँ के शहद की मक्खियों से निकाले शहद से अधिक मोठी वस्तु संसार में मुझे तो कोई दीखती

नहीं। और मेरे जितना धनी कौन होगा ? मेरे कोठे हमेशा अनाज से भरे रहते हैं, मेरी तिजोरिया रुपयों और अशर्फियों से—यह कह किसान मुस्कराने लगा।

तब मुखिया ने चरवाहे से उसका उत्तर पूछे।

चरवाहा बोला मुखिया जी, कल्पना (ख्याल) से अधिक तेज कोई नहीं चल सकता—आँख झपकते ही वह इंगलेंड, अमेरिका, रूस की सैर करा देती है। और थके-टूटे मनूष्य से पूछिएं कि क्या संसार में नींद से अधिक मीठी चीज कोई हो सकती है ? शहद का नींद से क्या मुकाबला ? जिस मनूष्य की आँखें नींद से बोझिल हो रही हो" उसे शहद के बदले जागने के लिए कह कर तो देखिए ? मीठे से मीठे शहद को भी वह नींद से न बदलेगा। और हाँ, धरती माता से अधिक धनो तो संसार में कोई है ही नहीं उसी से यह अनाज उपजता है, जिससे लोग हजारों क्यों, लाखों रुपया कमाते हैं, और सोना भी तो धरती ही से मिलता है ! मेरे साथी का कमाया धन और सोना धरती माता की देन नहीं तो और किसकी है।

× × ×

मुखिया ने तुरन्त फैसला कर दिया-बछिया का अधिकारी चरवाहा ही है। यह फैसला सुनकर किसान का चेहरा फटे गुब्बारे की तरह सिकुड़ कर रह गया।

किन्तु मुखिया के चरवाहे से पूछा—मुझे सच-सच बताओ कि ये उत्तर तुम्हें किसने बताए हैं ?

पहले-पहल तो चरवाहे ने बड़ी टाल-मटोल की। किन्तु जब

मुखिया ने बहुत तकाजा किया तो उसे बताना ही पड़ा कि मुझे ये सारे उत्तर मेरी लड़की सुरबाला ने बताए हैं।

— दिखता है तुम्हारी सुरबाला बहुत चतुर है। यदि वह इतनी ही सुन्दर भी है जितनी चतुर तो मैं उससे शादी कर लूँगा। पर शादी से पहले मैं उसे एक बार देखना चाहता हूँ।

सुरबाला से मिलकर मुखिया की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा। और उन दोनों की शादी हो गई।

शादी करने से पहले मुखिया ने एक शर्त रखी कि तुम मेरे काम में कभी दखल न देना। नहीं तो मैं तुम्हें घर से निकाल कर तुम्हें तुम्हारे मैके पहुँचा दूँगा।

सुरबाला ने यह शर्त मान ली। और वे दोनों हँसी-खुशी जीवन विताने लगे। सुरबाला हमेशा इसके काम-काज में लगी रहती और अपने स्वामी को हमेशा प्रसन्न रखा करती।

एक बार मुखिया के पास दो किसान एक झगड़े का फैसला करवाने आए। एक किसान की घोड़ी ने एक बछड़े को बाजार में जन्म दिया था। वह बछड़ा दौड़ कर दूसरे किसान की बैलगाडी के नीचे जा घुसा! इस पर दूसरे किसान के दिल में बेईमानी आ गई! वह कहने लगा कि यह तो मेरा बछड़ा है। मुखिया ने उससे पूछा—भाई, तुम्हारी घोड़ी तो है नहीं—फिर यह बछड़ा तुम्हारा कैसे हुआ ?

उस किसान ने लापरवाही से उत्तर दिया—यह मेरी बैलगाड़ी से पैदा हुआ है।

फैसला करते हुए मुखिया का ध्यान कहीं और ही था। उसने कह दिया—बछड़े का मालिक वही है जिसके छकड़े के नीचे बछड़ा खड़ा मिला है।

× × ×

सुरबाला को यह निर्णय सुनकर बड़ी शर्म आई। उसने बछड़े के असली मालिक को धीरज देकर और कुछ समझा कर बिदा किया, और कहा—तुम मछली पकड़नेवाला एक जाल ले आओ।

शाम को जब मुखिया घर लौटा तो उस किसान को, घर के सामने की पगडंडी पर, मछली पकड़ने का जाल बिछाए बैठा देख कर उसने पूछा—भाई, यहाँ क्या कर रहे हो ?

किसान - जनाब, मछलियाँ पकड़ रहा हूँ।

मुखिया– मछलियाँ। यहाँ सूखी धरती क्या मछलियाँ उगलती है ?

किसान चट बोला—जी हाँ, यदि बैलगाड़ी घोड़ी के बछड़े पैदा कर सकती हैं तब तो सूखी धरती भी मछलियाँ उगल सकती है।

यह जवाब सुनकर मुखिया ने अपने गलत फैसले को रद्द कर दिया। किन्तु मुखिया ने किसान से पूछा—यह युक्ति तुम्हें किसने बताई थी ? पहले तो किसान ने बड़ी टाल-मटोल की किन्तु आखिर में उसे यह बात बतानी ही पड़ी।

इससे मुखिया को बड़ा क्रोध लाया। घर जाते ही उसने पत्नी से पूछा– सुरबाला, क्या तुम्हें वह शर्त याद नहीं जो मैंने शादी से पहले तुमसे पक्की की थी ? कल ही तुम अपने मैके की राह लो। हाँ, अगर तुम चाहो तो, याद के लिए, मेरे घर से एक ऐसी चीज जो तुम्हें सबसे अच्छी लगे ले जा सकती हो।

सुरबाला ने चतुरता की। उसने रात को ऐसी स्वादिष्ट चीजें पकाई जो उसके पति को बहुत भाती थी वह खाता गया। पेट भर

जाने पर उसकी पलकें नींद से भारी होती गईं, यहाँ तक कि कुर्सी पर बैठे-बैठे ही वह सो गया। उसे जगाए बिना सुरबाला उसे गाड़ी में उठवा अपने साथ मैके ले गई।

दूसरे दिन जब मुखिया की आँख खुली तो उसने अपने आपको चरवाहे की झोपड़ी में पाया।

—इसका क्या मतलब है ?—वह चिल्ला उठा।

कुछ भी नहीं मेरे स्वामी, कुछ भी तो नहीं—सुरबाला मुसकरा कर कहने लगी—आपने मुझे एक ऐसी चीज अपने साथ ले आने की इजाजत दी थी जो मुझे अति प्रिय हो। बस, मैं वह चीज ले आई हूँ।

सुरबाला को उसके पति बड़े आदर से लौटा लाए और जीवन भर उसे बहुत-बहुत प्यार किया '

---

१६. मूर्ख ने प्राण लिए

मेरी आजी ने एक दिन कहा, मेरी परनातिन मीरा खूब पढ़ेगी और मैं इसकी शादी खूब पढ़े-लिखे के साथ करूँगी ।

मेरी माँ ने कहा—लड़कियों को ज्यादा पढ़ाकर क्या होगा, कौन डिप्टी कलक्टरी और इंजिनियरिंग करनी है । पर अइया ने झट कहा-- बाप डाक्टर है, यूनिवर्सिटी में पढ़ाता है तो यह क्या उससे कम होगी । मूर्ख से तो शादी .नहीं करूँगी चाहे जो हो अइया ने झट एक पुरानी कहानी सुनाई--यह कहानी उन्होंने अपनी आजी से सुनी थी ।

भोजराज की नगरी धारानगरी से गोविन्द और विष्णु नाम के दो लड़के पढ़ने के लिए काशी आए थे । बारह साल के बाद पढ़ाई पूरी हो जाने पर अपने घर के लिए रवाना हुए । रास्ते में उन्हें भूख लगी और एक नदी के किनारे बैठ गए । आटा-दाल तो उनके पास था- पर खाना पकाने के लिए आग न थी ।

—गोविन्द ! अब तो भूखे मरे । काशी से चलते समय अपने साथ सब कुछ रखा, पर आग तो भूल ही गए, अब कैसे काम चलेगा । बियाबान जंगल है, दूर-दूर तक बस्ती का नाम नहीं । भूखे पेट चला भी नहीं जाएगा ।

—घबराओ नहीं, विष्णु, सब ठीक हो जाएगा । लकड़ी इकट्ठा करो । मैं आग का बन्दोबस्त करता हूँ ।

विष्णु इधर-उधर से लकड़ियाँ बटोर कर लाया और उन्हें गोविन्द

